हिन्दी आवृत्ति

चैतन्य लहरी

खण्ड - XII जुलाई-अगस्त-2000 अंक 7 & 8

आपकी गहराई में ही सारा सुख, समाधान, सारी सम्पत्ति, ऐश्वर्य, श्री सब कुछ.....है। उस गहराई में उतरने के लिए बीच की जो कुछ रुकावटें हैं उनको निकाल देना चाहिए।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

27.11.91

माँ कुण्डलिनी के प्रेम कुण्डल पाश में पानी पैर क्रिया करती हुई रोहिणी (दिल्ली) की एक नन्ही बालिका।

इस अंक में

1.	प्रार्थना	3
2.	जन्मदिवस पूजा-21.3.2000	5
3.	77वां जन्मदिवस पूजा हिन्दी प्रवचन 21.3.2000	8
4.	77वां जन्मोत्सव समारोह (एक रिपोर्ट)	11
5.	जन्मोत्सव समारोह	
	(क) श्री बलराम जाखड़ का भाषण	14
	(ख) श्री एल.के आडवाणी का भाषण	15
	(ग) श्रीमन सी.पी. श्रीवास्तव का भाषण	16
6.	श्रीमाताजी का जन्मोत्सव भाषण (22.3.2000)	18
7.	श्रीमाताजी का दूल्हों को परामर्श (23.3.2000)	25
8.	श्रीमाताजी की दुल्हनों को सीख (23.3.2000)	26
9.	आत्मसाक्षात्कार में स्थापित किस प्रकार हों। लन्दन (15.10.79)	28
10.	ध्यान की आवश्यकता 27.11.91 दिल्ली	35
11.	बम्बई जन कार्यक्रम 13.3.2000	40

सम्पादक : योगी महाजन

प्रकाशक : विजय नालगिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली-110 067

मुद्रक : अभिनव प्रिन्ट्स, दिल्ली-34
फोन : 7184340

प्रार्थना

हे माँ आदिशक्ति, कृष्णावतार में आपने कहा था

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

हे अर्जुन, जब जब आसुरी शक्तियाँ धर्म का पतन करती हैं और अधम का साम्राज्य हो जाता है तब-तब मैं धर्म के उत्थान और पुनर्स्थापन के लिए पृथ्वी पर साकार रूप में अवतरित होता हूँ।

श्रीमाताजी, भगवान श्री ईसा-मसीह ने भी आपके अवतरण के विषय में भविष्यवाणी की:-

"एक बार फिर ईसा मसीह ने ग्यारह शिष्यों को सम्बोधित करते हुए कहा, 'मैं जा रहा हूँ परन्तु इस कारण से आपको शोक नहीं करना चाहिए, मेरे जाने में ही बेहतरी है। मैं यदि नहीं जाऊंगा तो सुखदाता (Comforter) आपके पास नहीं आएंगी। पूर्ण मानव शरीर के साथ मैं आपसे ये बातें कर रहा हूँ परन्तु जब पावन लहरियाँ सशक्त होंगी तो, लो! आपको अधिकाधिक सिखाएंगी और जो भी शब्द मैंने आपसे कहे हैं वे आपकी स्मृतियों में आएंगे। अभी भी अनगिनत चीज़ों के विषय में बताया जाना बाकी है; उन सब चीजों के विषय में जिन्हें ये समय स्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि आज के लोग इन्हें समझ नहीं सकते। परन्तु, लो, मैं बताता हूँ परमात्मा के महान दिवस आने से पूर्व पावन लहरियाँ सारे रहस्यों को खोल देंगी।

आत्मा के रहस्य, जीवन के, मृत्यु के, अमरत्व के, एक व्यक्ति के दूसरे व्यक्ति तथा परमात्मा से एकाकारिता के रहस्यों को। तब विश्व सत्य की ओर चलेगा और मानव सत्य बन जाएगा। जब वे सुखदाता आएंगी तो विश्व को मेरे बताए गए पाप और सत्य, इंसाफ़ के निर्णय की विवेकमयता के विषय में विश्वस्त कर देंगी और तब विषय वासनाओं के स्वामी को निकाल फेंका जाएगा। जब वे सुखदाता आएंगी तो मुझे आपके लिए उनसे अनुनय न करना पड़ेगा क्योंकि तब आपको मान्यता प्राप्त हो चुकी होगी और तब परमात्मा आपको उसी प्रकार जानते होंगे जैसे वे मुझे जानते हैं।" (ईसा मसीह का अक्वेरियन उपदेश, अध्याय 162V.4)

धर्म के उत्थान तथा अपने वचन को पूर्ण करने के लिए, हे परमेश्वरी माँ, अत्यन्त कृपा करके इस घोर कलियुग में आपने अवतरण लिया और विश्व भर के साधकों की कुण्डलिनी जागृत करने के महान कार्य का बीड़ा उठाया।

श्री आदिशंकराचार्य के साथ हम सब भी प्रार्थना करते हैं :-

नित्यानन्द करी वराभय करी सौंदर्य रत्नाकरी
निर्धूताखिल घोर पाप निकटी प्रत्यक्ष माहेश्वरी
प्रालेयाचल वंश पावन करी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षांदेही कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी

हे माँ अन्नपूर्णेश्वरी! आप ही दैवी आशीर्वाद की दाता हैं, एक हाथ से आप वरदान देती हैं

और दूसरे से निडरता। आप सौन्दर्य का सागर हैं और सर्वपापविनाशनी हैं। निःसन्देह आप ही महादेवी हैं। आपने ही हिमालय के कुल को पावन किया (पार्वती हिमालयपुत्री थीं) कृपा करके प्रसन्न होईए और हमें भिक्षा प्रदान कीजिए।

इस योग भूमि पर आपका सतहत्तरवाँ जन्मोत्सव मनाते हुए आपके हम सभी सहजयोगी बच्चे प्रार्थना करते हैं कि हे देवी,

अटूट श्रद्धा से भर दो हमारे हृदय,
आपके और सहज के प्रति
हम सब समर्पित रहें सर्वदा,
चरण कमल अपने, कृपा कर,
हमारे हृदय में विराजित करें,
दान दें शुद्ध चित्त और
निर्विचार-चेतना,
अखण्ड ध्यान में हों स्थिर अन्ततः।

आपके बच्चे

77वीं जन्म दिवस पूजा
निर्मल धाम दिल्ली 21.3.2000

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी जी का प्रवचन

आपका प्रेम देखकर मेरा रोम-रोम पुलकित हो उठा है और इस सुन्दर स्थान का सृजन करने वाले सभी सहजयोगियों के प्रति कृतज्ञता से मेरा हृदय भर गया है। इतने सुन्दर, इतने शान्त स्थल की सृष्टि करने के लिए उन्हें कितना कठोर परिश्रम करना पड़ा होगा। इसकी तो मैं कल्पना ही नहीं कर पा रही हूँ। सहजयोग में किस प्रकार परस्पर गहन सम्मान एवं प्रेम से लोग कार्य करते हैं तथा ऐसी चीज़ों की सृष्टि करते हैं कि विश्वास ही नहीं होता! जिस स्थान पर आपने जीवन एवं प्रकाश की स्थापना की है यह इससे पूर्व बंजर था। आप लोग मेरा जन्मोत्सव मनाना चाहते हैं। मैं नहीं जानती कि जन्मदिन मनाने का इतना क्या महत्व है। परन्तु जिस प्रकार से आप लोगों ने सम्मान एवं सूझ बूझ दर्शाई है उसे देखकर मैं मन्त्रमुग्ध हो गई हूँ। मैं समझ नहीं पाती कि मैंने आप लोगों के लिए ऐसा क्या किया है कि आप सहजयोग का कार्य करें। आज होली का शुभ दिवस है आज के दिन हम लोग होली खेलते हैं तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं एकता का प्रदर्शन करते हैं।

यह ऐसा समय है जब हम वास्तव में दूसरों के लिए प्रेम एवं सम्मान के मूल्य को समझते हैं। अभी तक तो हमारे सभी सिद्धान्त एवं धारणाएं इस नियम पर आधारित थीं कि मानव परस्पर प्रेम नहीं कर सकते। वे सदैव दूसरों पर हावी होने, उनसे घृणा करने या उनकी चीज़ें हथियाने का ही प्रयत्न करते रहते हैं। हमारे अन्दर यही गलत विचार भरे हुए थे, यही कारण है कि इन धारणाओं को रोकने के लिए जो भी संस्थाएं बनाई गई वो भी दूषित हो गई। स्वयं को समझने का एकमात्र उपाय 'स्वयं को पहचानना' है। जब आप स्वयं को पहचान लेते हैं तो आप हैरान हो जाते हैं कि प्रेम करना और पाना ही महानतम कार्य है। अपनी अधम प्रवृत्तियों पर पूर्ण नियंत्रण करने के पश्चात् आप सामूहिक प्रेम का आनन्द लेते हैं। सहजयोग में यह सब बहुत सहज है और अत्यन्त ही सहज रूप से कार्य करता है। यह बहुत सहज है परन्तु इसकी गहनता में उतरना बहुत महत्वपूर्ण है। पूरे विश्व से दिल्ली से और पूर्ण भारत से आप सबको परस्पर प्रेम एवं सूझ-बूझ का आनन्द लेते हुए देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मैंने कभी आशा नहीं की थी कि अपने जीवनकाल में ही मैं प्रेम, विश्वास और शान्ति का यह सुन्दर संसार देख पाऊंगी।

आज, मैं कहना चाहूंगी, यह सब दर्शाता है कि हममें क्या करने की योग्यता है। हम, तथाकथित, मानव अत्यन्त स्वार्थी, अपने तक सीमित और अपने लिए ही चिन्तित हैं। यही

कहा जाता है। परन्तु, आश्चर्य की बात है, आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करके, आत्मज्ञान पाकर, स्वयं को जानकर आप समझ जाते हैं कि अन्दर से आप कितने वैभवशाली एवं महान हैं और आप के अन्दर कितनी योग्यता है। आपमें ये सूझ-बूझ आ जाती है और अत्यन्त सुन्दर ढंग से इसकी अभिव्यक्ति होती है।

उन्नत होने में सहजयोग को काफी समय लगा और आप सब लोग धीरे-धीरे परिपक्व हो रहे हैं। परन्तु आज मैं कहूंगी कि अब यह इतनी बुलन्दी पर पहुँच गया है कि इससे बाहर जाना लोगों के लिए कठिन कार्य है। जब आप स्वयं को पहचान लेते हैं, वास्तविकता तथा पूर्ण सत्य को जान लेते हैं तब उस ज्ञान में विलीन हो जाते हैं। निःसन्देह आपको उतनी जानकारी नहीं है जितनी लोगों को है। आप तो सच्चे शब्दों में ज्ञानी हैं क्योंकि आप महसूस करते हैं कि आपके अन्दर प्रेम की महान शक्ति है। आपमें सूझ-बूझ की अथाह शक्ति है, एकरूपता और सामूहिकता की अथाह शक्ति है। यह सामूहिकता चमत्कार करती है और आनन्द प्रदान करती है कि हम सब एक हैं, हम दुश्मन नहीं हैं और हमें कोई समस्या नहीं है। आप सब एक हैं। जिस प्रेम की अभिव्यक्ति आपने की वह लहरों सम है जो तट की ओर जाती हैं, तट को छूती हैं और सुन्दर आकार बनाती हुई वापिस आ जाती हैं और अब मैं यह घटित होते हुए देख रही हूँ कि ये सुन्दर आकार आपके अपने जीवन में, आपकी जीवन शैली में और आपके आचरण में अभिव्यक्त हो रहे हैं। मेरे सम्मुख एक अत्यन्त विशिष्ट मानव जाति बैठी हुई है। मैं आप सब लोगों के प्रति पूर्णतः अनुगृहीत हूँ कि आपने इस आत्मज्ञान को अपनाया और इसका आनन्द अन्य लोगों के साथ लिया। स्वयं का ज्ञान होना अत्यन्त असाधारण चीज है। केवल मानव ही इस कार्य को कर सकता है। हीरा बहुमूल्य हो सकता है परन्तु यह स्वयं अपने मूल्य को नहीं जानता। कोई कुत्ता या अन्य पशु विशेष हो सकता है परन्तु वह नहीं जानता कि वह क्या है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेने से पूर्व मानव की भी यही स्थिति होती है। आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हो जाने के पश्चात् वह अचानक जान जाते हैं कि वे क्या हैं। और तब एकदम वे अत्यन्त विनम्र हो जाते हैं, अत्यन्त प्रेममय हो जाते हैं। मान लो किसी व्यक्ति को यदि पता चले कि वह सम्राट है, महान संगीतकार है या प्रधानमन्त्री है तो वह अन्य लोगों से कट जाता है अपने आप में ही फूला नहीं समाता। परन्तु जो ज्ञान आपने प्राप्त किया है इसे पाने के पश्चात् आप अन्य सहजयोगियों से एकरूप हो जाते हैं। यह बात अत्यन्त असाधारण है। यह इस प्रकार कार्य करती है कि आप एक दूसरे का इतना आनन्द लेते हैं कि सामूहिक कार्यों को करने के लिए स्वयं को समर्पित कर देते हैं।

सत्तर वर्षों का मेरा अनुभव वास्तव में भिन्न प्रकार की घटनाओं, भिन्न प्रकार के लोगों से परिपूर्ण है। अपनी आंखों से ये दृश्य देखना कितना आनन्ददायी है कि सारे उतार चढ़ावों के बावजूद भी इतने सारे सुन्दर कमल खिल उठे हैं। वे इतने सुरभित हैं, इतने सुन्दर हैं, इतने रंग बिरंगे और आकर्षक हैं। इस सारी उपलब्धि का कारण हमारी अन्तर्जात मूल्य प्रणाली है क्योंकि

हमारे अन्दर प्रेम एवं करुणा की महान संवेदना अन्तर्जात है। वास्तव में इस करुणा को समझा जाना चाहिए और इसका आनन्द लिया जाना चाहिए तथा करुणा के इस सागर में कूद पड़ना चाहिए। यह इतना सुन्दर है और यह देखकर आप हैरान होंगे कि स्वतः ही आप तैरने लगेंगे और इसी समुद्र में आपकी भेंट अन्य लोगों से होगी। बिना किसी समस्या के, बिना किसी कष्ट के सभी प्रेम, करुणा और इस परमेश्वरी प्रेम का आनन्द लेंगे।

दिल्ली के लोगों को मैं बधाई देती हूँ। उन्होंने इतना सुन्दर इन्तजाम किया, इतना सुन्दर पण्डाल बनाया और सहजयोगियों के रहने के लिए इतना सुन्दर प्रबन्ध किया। यह वास्तव में प्रशन्सनीय है। मैंने इसके लिए कुछ नहीं किया, कुछ भी नहीं। किस प्रकार इन लोगों ने मिलकर कार्य किया! न कोई लड़ाई हुई न झगड़ा और न ही कोई निन्दा चुगली। हैरानी की बात है कि उन्होंने इतने सुन्दर स्थल की रचना की! यह सहजयोग में उनकी परिपक्वता को दर्शाता है। इतने कम समय में इस महान कार्य को संपन्न करने के लिए मैं उन्हें बारम्बार बधाई देती हूँ।

77वीं जन्मदिवस पूजा

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

निर्मल धाम-दिल्ली 21-3-2000

पहले अंग्रेजी में बातचीत की क्योंकि यहाँ परदेस से बहुत से लोग आए हैं और आप को कोई एतराज नहीं कि हम थोड़ी देर अंग्रेजी में बातचीत करें। हालांकि यह तो दिल्ली वालों का कमाल है और उसी के साथ उत्तर प्रदेश के लोग, वो भी जुट गए और राजस्थान के लोग भी जुट गए और हरियाणा के लोगों ने भी मदद की। इन सब ने मिल करके इतने प्यार से बड़ा ही सुन्दर मन्दिर जैसे बनाया है। मैं तो खुद ही देखकर हैरान हो गई। क्या यहाँ पर ऐसे कारीगर लोग हैं? मैं तो नहीं जानती थी! सारी कारीगरी कहाँ से आई और कहाँ से उन्होंने सब कुछ बना कर यहाँ सजाया। यह समझ में नहीं आता। इस कदर इस देश में हुनर वाले लोग हैं ये भी मुझे नहीं मालूम था, और वो भी प्यार का हुनर! प्यार की शक्ति। प्यार की कला। सबसे प्यार करने की कला। ये जिसमें आएगी वही ऐसी कलात्मक कृति कर सकता है। इसकी कला सीखनी चाहिए कि हम किस तरह से अपने वाचा से, मन से, बुद्धि से कलाकार बनें। प्रेम के कलाकार बनें। और कैसी बात करने से हम दूसरों को सुख दे सकते हैं और आनंद दे सकते हैं। कौन सी प्यारी बात ऐसी होती है जो हम कर सकते हैं। एक तो वाचा, से हुआ फिर बुद्धि से हम क्या ऐसे सोच सकते हैं कि कौन सी बात से लोगों से प्यार जताया जाए। किस तरह से हम अपना हृदय दूसरों के सामने खोल सकें और उन्हें अपने हृदय में बसा सकें। और मन से हमको यह सोचना चाहिए कि जिस मन में प्यार नहीं है वो संसार में किसी भी चीज़ का अधिकारी नहीं होता क्योंकि जो भी चीज़ उसे मिलती है वो किसी भी तरह से तृप्त नहीं हो सकता। उसमें तृप्ति नहीं आ सकती। लेकिन जब आपके मन में ही एक तृप्ति का सागर है तो ऐसी कौन सी चीज़ है जिससे आप तृप्त न हों। ये चीज़ें जब आपके अंदर हो जाती हैं और समाधान आपके अंदर समा जाता है तो समाधान की परिधि को कोई समझ नहीं सकता। उस समाधान के व्यापार को कोई समझ नहीं सकता और इतना मधुर, इतना सुन्दर वो सब कुछ होता है कि उसे देखते ही बनता है। समझ में ही नहीं आता कि ये मैं क्या कर रहा हूँ और दूसरे क्या कर रहे हैं। मैं क्या कह रहा हूं और दूसरे क्या कह रहे हैं और ये किस तरह से अपने प्यार का परिधान मेरे ऊपर डाल रहे हैं। किस प्रकार से हम उनके ऊपर अपने प्यार की वर्षा कर रहे हैं। बस रात दिन यही चिन्ता लगी रहती है कि आज उनसे मिलना है तो उनसे कौन सी प्यारी बात करी जाए। उनसे कौन से हित की बात करी जाए क्योंकि बेकार की बातें करने की जो व्यवस्था है उससे सिर्फ नुकसान हुआ और फायदा कोई हुआ नहीं। क्रोध, जो मनुष्य में होता है उससे

और भी ज्यादा हानि हुई। तो आपको कुछ सिखाने की जरूरत नहीं कि हिंसा मत करो। किसी के साथ दुष्ट व्यवहार मत करो। किसी को नष्ट नहीं करो। किसी का पैसा मत खाओ। ये सिखाने की जरूरत नहीं। अपने आप ही इतने सुन्दर हो गए। अपने आप ही, मैंने कहा कमल के पुष्प हो गए क्योंकि आप सिर्फ़ अपना सुगंध देना जानते हैं और कुछ नहीं जानते। और उस देने का जो मजा है उसका आनंद उठाना एक अजीब सा ही अनुभव है। एक बड़ी अभिनव प्रकृति के ही लोग इसे कर सकते हैं। आप लोग इस चीज के अब मालिक हो गए और ये आपके पास धरोहर रखा हुआ जो था उसका पूरा उपयोग आपने कर लिया। वो चीज़ सब खुल गई, उद्धृत हो गई। अब उसका मजा उठाने की बात है। दुनिया में अनेक लोग अनेक तरह के होते हैं लेकिन आपको छू नहीं सकते। आप लोगों को परेशान नहीं कर सकते। गर कुछ हो ही सकता है तो वो भी आप लोगों में समाएँ, आपके साथ हो जाएँ। आपकी ज़िन्दगी देख करके वो खुद भी कुछ बदलने की नहीं तो कम से कम प्रवृत्ति रखें कि हम भी बदल जाएं। इस सारे संसार को बदलने का ठेका तो मैं नहीं कहती, मैंने लिया है लेकिन आप लोग इसका ठेका ले सकते हैं। इस संसार को अगर आपने बदल दिया, इसमें ऐसे सात्विक प्रवृत्ति वाले लोग आपने अगर निर्माण कर दिए तो फिर आगे इससे और कुछ करने की बात ही नहीं रहती। सिर्फ इतना ही जरूरी है कि आप इसमें संलग्न हो जाएं। इसमें कार्यरत हों कि हम कितने लोगों को परिवर्तित कर सकते हैं। माना कि साधारण मनुष्य में अनेक तरह के दोष हैं। अनेक दोषों से परिपूर्ण ऐसे मनुष्य को आप बहुत सुन्दरता से एक अच्छे अपरिचित स्वयं का ज्ञान करा सकते हैं। अपने अंदर जो स्व है, अपने अंदर जो आत्मा है उससे जब आप परिचित हो जाते हैं तो जान जाते हैं कि औरों को भी ऐसे करना चाहिए और भी अपने को जानें। ये खोए हुए हैं इनको मालूम नहीं कि ये कितना परम धन अपने अंदर समेटे हुए हैं। तो इनको ये देना ही चाहिए और इनको यह पाना ही चाहिए। इस तरह की बातें जब होनी शुरू हो जाएगी तो आप लोग अपने ऊपर जिम्मेदारी ले लेंगे कि हमें भी और लोगों को उनका यह परम धन देना ही चाहिए। उनकी कुंजी आपके पास में है और उसे आप किसी तरह से भी यह महान दान दे दीजिए तो देखिए वो किस कदर आपको मानेंगे और किस कदर आपके प्रति कृतज्ञ होंगे। सबसे बड़ा कार्य आप लोगों के सामने यही है कि जितनों को हो सके सहजावस्था में ले आएँ। उनको यह धन दे दें और जब ये चीज़ घटित हो जाएगी तो आप खुद इस कदर उसमें मग्न हो जाएँगे, खुश हो जाएंगे और एक तरह का आनंद जिसको वर्णित नहीं किया जा सकता, आप प्राप्त करेंगे। इस चीज को करना है। आज हमारा जन्मदिन आप लोगों ने मनाया, बहुत इसका धन्यवाद कहना चाहिए और आपने इतनी खुशी से सब किया है। किन्तु मेरे लिए तो ये है कि हर साल, हर साल सहज योग इतना बढ़ता रहा और इसकी जो मर्यादाएँ हैं मैं भी नहीं समझ पा रही हूँ। पर आप लोगों को भी निश्चय कर लेना चाहिए कि आज माँ के जन्मदिन के दिन लोग सब कोशिश करेंगे कि

दूसरों का परिवर्तन करें और अपना तो हो ही गया लेकिन दूसरों का भी करना चाहिए। इससे पूर्णतया आपको इसकी पूर्णता मिलेगी। अभी तक जो आनंद है वो सीमित है परन्तु जब आप दूसरों में बांटेंगे और दूसरों में इसकी प्रतिध्वनि आएगी, उसके बारे में आप जब परिचित होंगे। उसको जब समझेंगे तो एक बहुत ही अभिनव इस तरह का आनंद आपके अंदर जागृत होगा। मैं देख रही थी कि आपके जवान लड़के, छोटे बच्चे सब नाच रहे थे। मारे खुशी के सब कूद रहे थे। कृष्ण ने होली इसलिए मनवाई कि सब आनंद में आ जाएं। श्रीराम का जो तरीका था उससे मनुष्य बहुत ही ज्यादा गंभीर हो गया था। उसका जीवन बहुत ही गंभीर हो गया था। तो उन्होंने ये तरीका निकाला कि मनुष्य खुल जाए। खुल करके खेले। वो बात अब सिर्फ सहजयोगी कायदे से कर सकते हैं और आपस में प्यार से होली खेल सकते हैं। उसमें किसी को तकलीफ दु:ख देने के लिए नहीं किन्तु अपना आनंद वर्णन करने के लिए और दूसरों को भी आनंदित करने के लिए।

सबको अनन्त आशीर्वाद

परम पूज्य माताजी श्री निर्मलादेवी का
77वां जन्मोत्सव

निर्मल धाम-मार्च 21.3.2000

एक विवरण

21 मार्च, 2000 को यमुना नदी के तट पर बसी भारत की राजधानी दिल्ली, परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के 77वें जन्मोत्सव की साक्षी थी। विश्व भर से सहजयोगी जन्मोत्सव स्थल पर आए हुए थे। यूरोप-उत्तरी अमेरिका, लैटिन अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, पूर्वी एशिया और रूस से आए लगभग सात सौ पच्चीस सहजयोगियों ने इस आनन्द के अवसर पर परम पावनी माँ के जन्मदिवस समारोह में रंग भर दिया।

विश्व भर से सहजयोग के ध्यान धारणा द्वारा मानव हृदय परिवर्तन में श्री माताजी की भूमिका की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए बधाई सन्देश आए। बधाई सन्देश भेजने वालों में, संयुक्त राज्य अमेरिका के उपराष्ट्रपति, वहाँ के भिन्न राज्यों के गवर्नर तथा दस नगरों के मेयर, कनाडा तथा आस्ट्रेलिया के प्रधानमन्त्री तथा संसद सदस्य, रूस की चिकित्सा संस्था के अध्यक्ष, कनाडा के मुख्य नगरों के मेयर्स तथा आइवरी कोस्ट के राष्ट्रपति सम्मिलित थे। उत्सव के संयोजक श्री वी.जे. नालगिरकर ने संक्षिप्त में 80 देशों से आए इन प्रशंसात्मक बधाई सन्देशों को उपस्थित सहजयोगियों के सम्मुख पढ़कर सुनाया। इन सन्देशों में कहा गया था कि श्रीमाताजी द्वारा प्रदान की गई सहजयोग ध्यान धारणा विधियों ने नव सहस्राब्दि को एक नई दृष्टि प्रदान की है जिसके द्वारा ऐसे वातावरण की सृष्टि हो सकती है जिसमें लोग रंग और जातिभेदों को समाप्त करके शान्तिपूर्वक रह सकें।

लोक सभा के पूर्व अध्यक्ष ने इस अवसर पर कहा कि सहजयोग जब विश्वभर में फैल जाएगा तो विश्व 'सच्चा सार्वभौमिक गाँव' (True Global Village) बन जाएगा। उन्होंने कामना की कि जब तक यह लक्ष्य प्राप्त नहीं हो जाता तब तक श्री माताजी अपना जन्मदिवस इसी तरह से मनाती रहें। अपनी आगामी कश्मीर यात्रा में कश्मीर समस्या का समाधान खोजने के लिए वे श्री माताजी से आशीर्वाद लेना न भूलें।

गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने बधाई देते हुए कहा कि इस अवसर पर यहाँ आने का उनका लक्ष्य श्रीमाताजी के दर्शन करना तथा उनके प्रवचन को सुनना था। उन्होंने प्रदूषण के विषय में भी बात की-भौतिक प्रदूषण नहीं, समाज की नस-नस को विषाक्त करते हुए चारित्रिक प्रदूषण की। चारित्रिक प्रदूषण के समाधान के रूप में उन्होंने कहा कि सहजयोग ध्यान धारणा द्वारा आध्यात्मिक उत्थान प्राप्त करके इस आन्तरिक प्रदूषण को समाप्त किया जा सकता

है। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री सुन्दर लाल पटवा ने कहा कि परम पावनी माँ के चरण कमलों में समर्पित होकर उनके आनन्द का कोई पारावार नहीं रहा। लेडी हार्डिंग अस्पताल के शरीर विज्ञान की अध्यक्ष डॉ. शोभा दास ने श्रीमाताजी को दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार किए गए **'सहजयोग द्वारा तनाव प्रबन्धन'** विषय पर लिखे गए दो शोध-ग्रन्थ भेंट किए। उन्होंने लिपिड पैरॉक्सीडेशन (Lipid Peroxidation) नामक रोग पर सहजयोग के प्रभाव का भी संक्षिप्त वर्णन किया।

भारतीय लोक सेवा तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के अन्तर्राष्ट्रीय पदों पर भिन्न सम्मानों से विभूषित सर सी.पी. श्रीवास्तव ने अपने परिवर्तन की तीन अवस्थाओं का वर्णन किया। पहली अवस्था विस्मय, दूसरी गौरव और तीसरी अवस्था समर्पण की थी। आरम्भ में जब उन्होंने लोगों को सामूहिक रूप से परिवर्तित होते देखा तो वे अत्यन्त विस्मित हुए। जब उन्होंने सहजयोगियों और योगिनियों द्वारा समाज परिवर्तित होते हुए देखा तो स्वयं को अत्यन्त गौरवान्वित महसूस किया और अब अपने अस्सीवें वर्ष में वे समर्पण की स्थिति में पहुँच गए हैं-परमेश्वरी शक्ति के प्रति समर्पण की स्थिति में, जिसमें सहजयोगियों-योगिनियों की अद्वितीय देवदूत सभा का सृजन किया है। उन देवदूतों का एकमात्र लक्ष्य धर्म और जाति भेदों से ऊपर उठकर एकमात्र सहजयोग परिवार का सृजन करने के लिए परस्पर पावन प्रेम की अभिव्यक्ति करना है। उन्होंने कहा कि यह सभा संयुक्त राष्ट्र की जनरल असेम्बली से भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विश्व की चारित्रिक, नैतिक, आध्यात्मिक सभा की प्रतीक है। विश्वभर में इसी प्रकार की सभाओं का सृजन करके एक नए प्रकार की मानवता का सृजन करने के परम पावनी माँ के स्वप्न का भी उन्होंने वर्णन किया। उपस्थित सभा के सम्मुख सर सी.पी. श्रीवास्तव ने दो प्रस्ताव रखे-पहला विश्व भर में सहजयोग प्रचार के लिए स्वयं को समर्पित करना तथा दूसरा यह कि परमपावनी माँ तब तक विश्व में अपने दिव्य शरीर को बनाए रखें जब तक विश्व का हर मानव उत्थान को प्राप्त नहीं कर लेता। सभा के प्रतिनिधि के रूप में श्री योगी महाजन ने दोनों प्रस्तावों को पारित किया।

हीरा अपने मूल्य को नहीं जानता, यही बात मानव के विषय में भी कही जा सकती है। जब तक वह आत्मज्ञान को प्राप्त नहीं कर लेता...आत्मज्ञान से सशस्त्र होकर आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति कमलों सम हो जाते हैं और अपनी अन्तर्जात मूल्य प्रणाली के कारण अत्यन्त रंग-बिरंगे और आकर्षक प्रतीत होते हैं तथा दिव्य सुगन्ध बिखेरते हैं।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी
21.3.2000

अपने प्रवचन में श्री माताजी ने कहा कि वे गहन देशभक्त लोगों का हृदय से सम्मान करती हैं। ऐसे लोगों को यदि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाए तो केवल अपने चित्त द्वारा सहजयोग की शक्ति को प्रभावशाली ढंग से उपयोग करके ये लोग समाज तथा देश की स्थिति को सुधार

सकते हैं। उन्होंने कहा कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाने पर विनाशकारी विचार तथा गतिविधियाँ स्वतः ही छुट जाती हैं। तलियाती के माफ़िया के एक मुखिया का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि किस प्रकार उस व्यक्ति ने सहजयोग अपनाकर स्थानीय लोगों की सेवा में स्वयं को लगा दिया है। श्री माताजी ने बताया कि आत्मा के प्रकाश में व्यक्ति देख सकता है कि समाज में तथा देश में कौन सी बुराइयाँ हैं और उसमें उन बुराइयों को सुधारने की शक्ति भी होती है। कुछ विदेशी सहजयोगियों द्वारा कश्मीर जाकर वहाँ के लोगों को परिवर्तित करने के प्रस्ताव का भी उन्होंने वर्णन किया।

"एक बार आत्मसाक्षात्कार जब आप पा लेते हैं तो आप धर्म के सौन्दर्य, धर्म की एकरूपता को समझ सकते हैं। जब परमात्मा एक है तो किस प्रकार आप धर्म के नाम पर लड़ सकते हैं? उन्होंने बताया कि रूस ने विश्व निर्मल धर्म को विशेष धार्मिक मान्यता प्रदान की है क्योंकि यह धर्म करुणा में विश्वास रखता है घृणा में नहीं। श्रीमाताजी ने बताया कि **'साकार' का स्वप्न 'निराकार' से ही आरम्भ होता है और ऐसा होना केवल आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् ही सम्भव है।** 'सच्चे ज्ञान' से सशस्त्र होकर आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति भिन्न धर्मों के वैमनस्य को प्रभावशाली रूप से दूर कर सकता है। योगभूमि भारत की तुलना उन्होंने पूरे विश्व की कुण्डलिनी से की और बताया कि पूर्ण ज्ञान केवल चैतन्य लहरियों की चेतना प्राप्त करने पर ही किया जा सकता है। उन्होंने ये भी कहा कि सच्चे ज्ञान को पाकर सहजयोगी पूरे समाज-देश को परिवर्तित कर सकते हैं। उदाहरण के रूप में उन्होंने बताया कि किस प्रकार आस्ट्रेलिया के सहजयोगियों ने उड़ीसा में नौ सहज योग केन्द्रों की स्थापना की है।

यह अवसर विश्व भर से आए तैंतीस सहजयोगी/योगिनियों को विवाह सूत्र में बंधते हुए देखने का साक्षी था। सार्वभौमिक भाईचारे की धारणा को स्थापित करने के लिए विश्व निर्मलाधर्म के विचारों की पक्की स्थापना का ये एक अन्य उदाहरण था।

77वां जन्मदिवस समारोह

निर्मल धाम-दिल्ली 22.3.2000

पूर्व लोकसभा अध्यक्ष

श्री बलराम जाखड़ का भाषण

प्रातः स्मरणीय, आदरणीय, स्नेहमयी आदिशक्ति माँ जी, बड़े भाई आडवाणी जी, सी. पी. साहब, माननीय उपस्थित बहनों भाइयो और सहजयोगियो। माँ, पिछले वर्ष भी आपका जन्मदिन मनाया था, इस बार भी मना रहे हैं और लगातार मनाते रहेंगे। यह बहुत कुछ सोचने की बात नहीं है। जन्म मरण तो आत्मा का नहीं शरीर का होता है लेकिन आप अपने में स्वयं आत्मा का जीवित स्वरूप हैं। आपका नाम-यथा नामा तथा गुण। निर्मल वाणी, निर्मल स्नेह, निर्मल संदेश, प्यार का संदेश, सांत्वना का संदेश, सद्भावना का संदेश, मित्रता का संदेश और एक साथ जीवन में आगे बढ़ने का, अपने आपको समझने का, आत्मा को परमात्मा से मिलाने का, ये आपका संदेश है माँ। पतित पावनी गंगा का पवित्र जल जैसे भारत भूमि को सिंचित करता है, वैसे ही आप हमारी आत्माओं को सिंचित करते हुए आगे बढ़ते रहिए। मनुष्य जन्म लेता है और उसे जीवित रहना पड़ता है। जो भी आता है उसे जीना पड़ता है। लेकिन ये तो कोई बात नहीं है कि अपने लिए जिओ। अपने लिए तो सभी जीते हैं। जीना तो वो है जो किसी और के लिए, सब के लिए जिए, और माँ तो संसार के लिए जीती हैं। माँ आत्मा तरसती है प्यार के लिए और आज तरसता है संसार, और उसकी तड़पती हुई आत्मा चाहती है कि कोई संदेशा दे प्यार का। पता नहीं कैसी भावना बढ़ती जा रही है कि यहाँ आपकी आवश्यकता है, आपकी वाणी की आवश्यकता है, कि यहाँ मनुष्य अपनी मानवता को समझ सके, अपने आपको समझ सके और वो ये समझ सके कि हमने सिर्फ दूसरों के भले के लिए सबके साथ, सबका भला सोचते हुए जीना है। आज यह सब विलुप्त होता जा रहा है। मन में एक बड़ी पीड़ा है माँ! आपका संदेश वो संदेश है जो आदि सत्य है। यत्र विश्व भवति एक नीड़म्। हमारा तो उससे भी आगे था, हजारों साल पहले हमने ये कहा था कि "वसुधैव कुटुम्बकम्" सारा संसार एक परिवार है। लेकिन आज परिवार बंटा हुआ है। लोगों की आत्माएँ लोगों ने बाँट दी हैं। सारा संसार एक विकृत रूप लेता जा रहा है। माँ जैसा कि आपने सुना है कि मैं कल कश्मीर जा रहा हूँ। क्यों जा रहा हूँ मैं? कोई भ्रमण करने नहीं जा रहा हूँ। वहाँ आत्माओं का संहार हुआ है। मनुष्य ने बर्बरता का रूप लिया है। आदमी अमानुषिक हो गया है। कैसा निकृष्ठ काम किया है और उसके लिए मैं आपसे झोली भर के प्रेम की, आशीर्वाद की, एक शीतलता की, एक स्नेह की ले के जा रहा हूँ कि मैं उनको दे सकूँ कि तुम भी जीना सीखो। मानवता पुकारती है माँ कोई आत्मा आए

इस संसार में, और संदेश दें। ये ही तो भगवान कृष्ण कह गए थे कि "यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत: अभ्युत्थानं धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्हयम्।" भगवान का ही रूप तो होता है आत्मा। क्यों ये सब लोग आए हैं यहाँ? जलसे बहुत होते हैं लेकिन ये जलसे में नहीं आए हैं। ये तो अपनी माँ के पास आए हैं। वात्सल्य के पास आए हैं। 'माँ' शब्द ही ऐसा है कि जो आत्मा को भर देता है। माँ का जो एक रूप है वो सबसे ऊँचा है। माँ शब्द से हृदय भर जाता है। माँ वात्सल्य देती है। आत्मा तृप्त हो जाती है। आत्मा को पोषण देती है। आत्मा जीती है उस स्वरूप से उस दिव्य स्वरूप से जो पाते हैं आप यहाँ।

मैं तो ये कहने जा रहा हूँ कि आज आवश्यकता है कि आपका संदेश फैले। आज 80 देशों से ऐसे तो बधाई संदेशे नहीं आ गए, कुछ होगा तभी आए हैं ना। यदि कोई आडम्बर होता है तो एक दिन चलता है 2 दिन चलता है 10 दिन चलता है। पर ये तो शाश्वत चल रहा है। शाश्वत इसीलिए चलता है कि इसमें सत्यता है। सार्थकता है। आप प्रतिमूर्ति हैं, प्रतिमूर्ति हैं सद्‌भावना की जो आज संसार में कम मिलती है। मनुष्य स्वार्थ में रत हो गया है, ये नहीं सोचता कि उसका जीवन कितना है? क्या समेट के ले जाएगा? क्या साथ चला जाएगा? सब कुछ नहीं जाएगा माँ। साथ जाएगा तो केवल आपका आशीर्वाद जाएगा, जाएगी तो आपकी प्रेम की भावना जाएगी जो हमारी आत्मा को उठाएगी और सिखाएगी कि तुम जीओ और जीने दो। इसी में सार्थकता है। भगवान से प्रार्थना है कि आपका प्रकाश फैलता रहे। सूरज तो रोज निकलता भी है, छुपता भी है परन्तु आप तो रात दिन हमारे पास हैं। माँ हृदय में एक ज्वाला धधकती है, एक विद्रोह की भावना जागती है कि आपकी इस प्यार की धार से इस जनता जनर्दान की सोच बदल कर प्यार में बदल दूँ। माँ यही आशीर्वाद देते रहो। बहुत धन्यवाद।

जयहिन्द

जन्मदिवस के अवसर पर श्रीमाताजी को बधाई देते हुए भारत के माननीय गृहमन्त्री श्री एल.के. आडवाणी ने श्रीमाताजी की दीर्घायु की कामना करते हुए कहा :-

सम्माननीय श्रीमाताजी, श्रीवास्तव जी, श्री बलराम जाखड़ तथा देश के अन्य भागों से आए हुए मेरे अन्य साथियो, इस संस्था के सहजयोगियो तथा योगिनियो। मैं श्री राजेश शाह का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे श्रीमाताजी तथा आप सबके दर्शन करने का सुअवसर प्रदान किया। मैं तो यहाँ पर श्रीमाताजी का प्रवचन सुनने उनके सानिध्य में कुछ समय बिताने तथा उनसे कुछ दिव्य ज्ञान प्राप्त करने यहाँ आया था। परन्तु आज उनका जन्मदिवस है अत: आप सबके साथ मैं और मेरी पत्नी श्रीमाताजी को प्रणाम करते हैं और उन्हें शुभकामनाएं देते हैं तथा परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दीर्घायु हों। हम ये भी प्रार्थना करते हैं कि वे सदैव उसी प्रकार चैतन्य फैलाती रहें जिस प्रकार वे पिछले कई वर्षों से कर रही हैं।

आजकल वातावरण की बहुत बातें हो रही हैं। वातावरण के विषय में बात करते हुए हमारे मस्तिष्क में प्राय: भौतिक वातावरण ही होता है। परन्तु मानव समाज में जिस प्रकार का प्रदूषण फैल रहा है वह अत्यन्त भयानक है और अत्यन्त विशाल जिस प्रकार हम प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों को प्रदूषण नियंत्रण उपकरण लगाने

के लिए कहते हैं उसी प्रकार समाज में फैले वर्तमान नैतिक प्रदूषण को दूर करने का उत्तरदायित्व श्रीमाताजी जैसे दिव्य व्यक्तियों पर आ गया है। अत: जब व्यक्ति इस प्रकार के उत्सव में भाग लेता है तो वह स्वयं को उन्नत महसूस करता है, उसे लगता है कि अन्त:स्थित प्रदूषण यदि पूरा नहीं तो कुछ सीमा तक घट गया है। मनुष्य के हृदय में प्रसन्नता होती है, आनन्द होता है। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं उतना आशीर्वादित नहीं हूँ जितना आप लोग। मुझे तो प्रदूषण में घूमना पड़ता है, आप लोग इससे बहुत ऊँचे हैं, आप लोग बहुत भाग्यशाली हैं। परन्तु ऐसे उत्सवों में भाग लेने के जो भी अवसर मुझे प्राप्त होते हैं, उनके लिए मैं स्वयं को धन्य मानता हूँ। यहाँ मेरे साथ आए मेरी पत्नी, मेरे सम्बन्धियों की ओर से तथा अपनी ओर से एक बार फिर मैं श्रीमाताजी को प्रणाम करता हूँ और सर्वशक्तिमान परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आपका आशीर्वाद हम पर सदैव बना रहे।

धन्यवाद।

श्री एल.के. आडवाणी को सम्बोधित करते हुए श्री योगी महाजन ने आश्वस्त किया कि जिस प्रदूषण की वे बात कर रहे थे, सहजयोग के माध्यम से वह पूर्णत: दूर हो जाएगा और नवसहस्राब्दि में, उनके सहयोग से, हम देश को इस प्रदूषण से बचा सकेंगे।

श्रीमाताजी को जन्मदिवस की बधाई देते हुए सर सी.पी. श्रीवास्तव ने इस प्रकार हृदयाभिव्यक्ति की:-

सम्मानीय श्री आडवाणी जी, श्रीमती आडवाणी, उपस्थित विशिष्टगण, सम्मानीय अतिथियो तथा प्रिय सहजयोगियो व योगिनियो। आज हमने इतना कुछ सुना कि समझ नहीं आता कि और क्या कहा जाए। परन्तु मैं ये कहना चाहूंगा कि आज मैंने अस्सी वर्ष का जीवन पूर्ण कर लिया है। आपकी पावनी माँ का जन्मदिवस मनाने का एक अनुभव जीवन को सम्पूर्ण बना लेने के लिए काफी है। एक व्यक्ति से कुछ व्यक्तियों तक और फिर विशाल समूह तक सहजयोग के विकास का मैं साक्षी रहा हूँ तथा मैंने चमत्कार होते हुए देखे हैं। आरम्भ में मुझे विस्मय हुआ कि यह सब किस प्रकार घटित हो सकता है। नशा लेने के आदि लोग किस प्रकार रातोंरात नशे छोड़ सकते हैं! तो मेरा पहला अनुभव विस्मयावस्था का था (Be wilderment) तत्पश्चात् मैंने बहुत से लोगों को उनकी कृपा से परिवर्तित होते हुए देखा और गौरव (Splendour) का अनुभव किया। विस्मय अवस्था से गौरव की स्थिति। और अब अपने जीवन के अस्सीवें वर्ष में मैं समर्पण (Surrender) की स्थिति में पहुँच गया हूँ।

इस सभा का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। यह अत्यन्त अद्वितीय सभा है जिसमें परमेश्वरी अवतरण उपस्थित हैं और जो देवदूतों से परिपूर्ण है। श्री आडवाणी जी ने प्रदूषण की बात की। मैं उन्हें विश्वास दिलाना चाहूँगा कि इस सामूहिकता में पूर्ण पावनता है। यहाँ उपस्थित लोग परस्पर पावन एवं विशुद्ध प्रेम से बंधे हुए हैं। इस सामूहिकता में सभी धर्मों, देशों जातियों के लोग बैठे हुए हैं, जिन्होंने अपने सभी भेदभाव भुला दिए हैं। ये सब केवल सहजयोग परिवार के सदस्य हैं। यह कितने गर्व की बात है विश्व के किसी कोने में भी आप जाएं आपको अपने बहन-भाई मिलते हैं। ये एक ऐसी सृष्टि है जिस पर आमतौर पर विश्वास नहीं होता। परन्तु वास्तव में ऐसा घटित हुआ है। इस सभा का सृजन

किसने किया है? मेरे विचार से ये सभा संसार की महत्वपूर्णतम सभा है, संयुक्त राष्ट्र की महासभा से भी अधिक महत्वपूर्ण। यह संसार की नैतिक सभा है, चारित्रिक सभा है, आध्यात्मिक सभा है। विश्व भर में पावन मानव समाज की सृष्टि करना आपकी प्रिय माँ का स्वप्न है। इस सभा के सृष्टा, इस नवस्वप्न के सृष्टा के सम्मुख सम्मान से मैं नतमस्तक हूँ।

मेरे पास दो प्रस्ताव हैं और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप लोग पूर्ण हृदय से मेरे साथ सहमत होंगे। पहला प्रस्ताव ये है कि परम पावनी माँ को बधाई देने के अतिरिक्त हममें से हरेक व्यक्ति स्वयं को सहजयोग विश्वभर में फैलाने के लिए पुनः समर्पित करें।

मेरा दूसरा प्रस्ताव, जिसे आप अधिक उत्साह के साथ पारित करेंगे, ये है कि जब तक पृथ्वी पर अवतरित हर मानव, हर पुरुष, हर महिला, हर बच्चा, आत्मसाक्षात्कार को नहीं पा लेता तब तक वे अपने साकार रूप को बनाए रखें। आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।

77वां जन्मोत्सव समारोह

निर्मल धाम-छावला, दिल्ली 22.3.2000

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का भाषण

सम्माननीय अतिथिगण, सम्माननीय गृहमन्त्री श्री आडवाणी जी, जो कि महान देशभक्त रहे हैं और उनके देश प्रेम के कारण जिनकी मैं सदैव प्रशंसक रही हूँ। वे अत्यन्त देशभक्त हैं और आप जानते हैं मेरे माता-पिता भी अत्यन्त देशभक्त थे। उन्होंने देश के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। देशभक्त होने के कारण उस समय सबने मेरी भी बहुत भर्त्सना की। जिस देश में हम जन्म लेते हैं उससे हमें अवश्य प्रेम करना चाहिए। आपके देश और आपकी आत्मा का गहन सम्बन्ध है। मैंने देखा है कि सहजयोग में आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करके परिवर्तित होने के पश्चात् लोग जान जाते हैं कि उनके देश में क्या कमी है। सहजयोगी उन कमियों के विषय में बहुत जागरूक हो जाते हैं। मैं हैरान हूँ कि सभी मुझे बताते हैं कि उनके देश में क्या कमी है और उसके विषय में क्या किया जाना चाहिए।

उन्होंने कभी अपने देश की गलतियों तथा बुराइयों का साथ नहीं दिया। यह बहुत हैरानी की बात है इसके विपरीत उन्होंने कहा कि श्रीमाताजी इन सब देशों को आपकी कृपा की आवश्यकता है ताकि ये सुधर सकें। वहाँ के राजनीतिज्ञ सुधरने चाहिए; वहाँ के नागरिक सुधरने चाहिए ताकि वे एक नव-चेतना में उन्नत हो सकें। सभी सहजयोगी इस कार्य में जुटे हैं। यहाँ हमारे सम्मुख विदेशों से आए बहुत कम सहजयोगी हैं। परन्तु मैं आपको बताऊंगी कि ये हैरानी की बात है कि किस प्रकार इन लोगों ने विश्व के हजारों लोगों को आत्मसाक्षात्कार की ज्योति प्रदान की! वास्तव में यही लोग कार्य कर रहे हैं। मैं उनकी तरह से कार्य नहीं कर रही। जिस प्रकार ये बधाई सन्देश हमें आए हैं, आप देख ही रहे हैं, ये सब इनके प्रयासों का फल है। सहजयोगी उनसे मिलते हैं उन्हें सहजयोग के विषय में बताते हैं और उन्हें आत्मसाक्षात्कार भी देते हैं। इस प्रकार से इन्होंने इस कार्य को किया है।

अतः हमें अपने देश और उसकी समस्याओं के विषय में चिन्ता करनी चाहिए। ये समस्याएं क्यों हैं? मैं जानती हूँ कि आपकी कामनाएं और प्रयत्न निश्चित रूप से आपके देश की स्थिति को सुधारेंगे। हर जगह ये घटित हो रहा है। भारत में भी ये घटित होना चाहिए। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् यह हमारा महत्वपूर्ण कर्त्तव्य बनता है कि सर्वप्रथम हम अपने समाज को देखें, अपने देश को देखें। आप यदि ऐसा नहीं करते तो आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने का क्या लाभ है? क्योंकि आत्मसाक्षात्कार एक शक्ति पर आधारित है प्रेम की शक्ति पर तथा एक कला पर आधारित है-निर्वाज्य प्रेम की कला। ज्यों ही आप अपने आस-पास के लोगों को, गाँव के लोगों को, आस-पड़ोस के लोगों को अपने नगर के तथा देश के लोगों को देखने लगते हैं तुरन्त यह निस्वार्थ प्रेम शुरू हो जाता है। तुरन्त आप समझने लगते हैं कि आपके अपने

समाज में क्या समस्याएं हैं। मैंने देखा है कि सहजयोग में आने के पश्चात् लोग अपने समाज के बहुत से दोषों को दूर करने की कोशिश करते हैं। सहजयोग में बहुत से हिन्दू हैं, मुसलमान हैं, इसाई हैं और सभी प्रकार के लोग हैं। परन्तु मैं एक चीज पर हैरान थी कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने कभी अपने समाज की और धर्म की बुराइयों का साथ नहीं दिया। इसके विपरीत उन्होंने इन बुराइयों को सुधारना चाहा और इसके लिए कार्य करना चाहा।

इस कार्य को करने का बहुत आसान तरीका है। लोगों को परिवर्तित करने के लिए न तो आपको मर्यादाएं तोड़नी पड़ती हैं न कोई बलिदान करने पड़ते हैं ऐसा कुछ भी नहीं करना पड़ता। आज हर व्यक्ति किसी न किसी प्रकार की चिन्ता या समस्या से परेशान है। उन्हें और भी समस्याएं हैं। आपको उन्हें बताना होगा कि आपका जीवन इस प्रकार से परिवर्तित हो सकता है कि आप इन सब चिन्ताओं से, इन सब समस्याओं से ऊपर उठ जाएंगे। आप पूछ सकते हैं कि ऐसा कैसे हो सकता है। जब आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करते हैं तो आपका चित्त आत्मा के प्रकाश से ज्योतिर्मय हो उठता है और स्वत: ही आप अपनी विनाशकारी आदतों, विचारों तथा गतिविधियों को त्यागने लगते हैं। अचानक आप सृजनात्मक हो जाते हैं। रूस में जब मैं तलियाती में थी तो आश्चर्यचकित करने वाली एक खबर मुझे मिली कि वहाँ के माफ़िये का मुखिया सहजयोगी बन गया है। इसने मुझे बहुत द्रवित किया। वह व्यक्ति मेरे पास आया और कहने लगा कि मैं ये सब उल्टे सीधे कार्य करता रहा हूँ। इनसे न मुझे कभी सन्तुष्टि मिली न कभी आनन्द। परन्तु सहजयोग से मुझे सन्तुष्टि भी मिलती है आनन्द भी।
श्रीमाताजी भूतकाल में मैंने जो भी कुछ किया उसके लिए कृपा करके मुझे क्षमा कर दें। मैंने कहा, "क्षमा किया।"

वर्तमान ही महत्वपूर्ण है और अब तो आप सहजयोगी बन गए हैं। जिस प्रकार आपने आध्यात्मिक उत्थान प्राप्त किया है वह प्रशंसनीय है। वह कहने लगा,"अब मेरे अन्दर शान्ति है, आनन्द है और इसे बाँटने के लिए मैं अन्य लोगों के पास गया। अपना धन मैं कभी दूसरों के साथ नहीं बाँट सकता था। मैं तो दूसरों से धन छीन लिया करता था।" मैंने कहा,"मुझे अपराध स्वीकृतियों की आवश्यकता नहीं है, सब हो गया। सहजयोगी होकर अब आप क्या करेंगे? आश्चर्य की बात थी कि वह इतना प्रेममय था। कहने लगा मैं भारत प्याज भेजूंगा। मैंने कहा, क्यों? उसने उत्तर दिया, क्योंकि वहाँ प्याजों का अभाव है। मैंने सोचा इस व्यक्ति को देखो यह कितना सच्चा और मानवीय बन गया है! मैंने कहा ऐसी कोई समस्या नहीं है तुम चिन्ता मत करो। चीजों की ओर देखने का उसका नजरिया इतना अच्छा था कि जो व्यक्ति माफिए का मुखिया था वह अत्यन्त अच्छा और सम्माननीय बन गया था। तब उसने नगर पालिका के चुनाव लड़ने चाहे। मैंने कहा अवश्य लड़ो, आप चुने जाओगे, और यदि न भी चुने गए तो कोई बात नहीं। परन्तु वह चुनाव जीत गया।

अत: आप देखें कि आत्मा बन जाने की इच्छा करने वाले व्यक्ति के कार्य किस प्रकार हो जाते हैं। शिवाजी ने कहा है,"स्व धर्म जाग वावा" भविष्य के लिए उन्होंने केवल यही सन्देश दिया है। स्व धर्म जाग वावा अर्थात आत्मा की जागृति। आप आत्मा को जागृत कर

लेते हैं और यही उपलब्धि हमें प्राप्त करनी है। शिवाजी क्योंकि स्वयं आत्मसाक्षात्कारी थे इसीलिए उन्होंने कहा कि आपको भी यही करना है, अपनी आत्मा को जागृत करना है। आत्मा के उस प्रकाश से क्या होता है? आपके समाज में क्या दोष हैं? आपके देश में कया दोष हैं? आप हर चीज़ को बहुत स्पष्टत: देखते हैं और आपमें इसे ठीक करने की शक्ति भी है। अपनी शक्ति के प्रति यदि आप जागरूक हैं और इस पर स्वामित्व भी आपने प्राप्त किया है तब आप यह कार्य कर सकते हैं। ऐसा आप न केवल अपने लिए कर सकते हैं, अपितु अपने परिवार, अपने समाज तथा अन्य सभी लोगों के लिए कर सकते हैं। मेरे पति कहा करते थे कि तुम समाजवादी हो क्योंकि तुम अकेले चैन से नहीं रह सकते। दूसरों के साथ बाँटना तुम्हारे लिए आवश्यक है, तुम सामूहिक हो। हमें समझ लेना चाहिए कि हम सामूहिक हैं। कहीं भी हम अकेले जीवित नहीं रह सकते। हम सभी सामूहिक हैं इस बात का हमें ज्ञान नहीं है। जब आपको इसका ज्ञान हो जाएगा तो आप आश्चर्य चकित होंगे कि आप पूर्ण के अंग-प्रत्यंग हैं अपने समाज में आपको साथी नहीं खोजने पड़ेंगे कुछ भी नहीं आप केवल सहजयोगियों का साथ ही चाहेंगे। यह बात पूर्णत: प्रमाणित हो चुकी है कि यदि आप आध्यात्मिक रूप से जागृत हैं तो आपका किसी के साथ कोई झगड़ा नहीं होता, किसी से कोई घृणा नहीं होती, किसी से आपकी कोई स्पर्धा नहीं रहती। सहजयोग में मैंने ऐसा किसी को करते हुए नहीं देखा। यही कारण है कि आप सब लोगों के लिए बाहर की चीजें इतनी अच्छी हो गई हैं। एक महिला राजदूत ने मुझे बताया कि श्रीमाताजी हम बहुत प्रसन्न हैं, मैंने पूछा क्यों? क्योंकि हममें स्पर्धा की भावना नहीं है इसीलिए सभी लोग हमसे प्रसन्न हैं। वास्तविकता यही है कि जब आप ये महसूस कर लेते हैं कि उच्च पद, वैभव, सम्पत्तियाँ पाने के विषय में आपको चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि सन्तोष तो आपके अन्तर्निहित है। आप अपने अन्दर इतने शान्त हैं कि भौतिक चीज़ों के पीछे नहीं भागते। आधुनिक अर्थशास्त्र एक साधारण तथ्य पर आधारित है कि मानव कभी सन्तुष्ट नहीं होता। आज उन्हें एक चीज़ की आवश्यकता है, सभी कुछ करेंगे और इसे प्राप्त करने के लिए धन खर्चेंगे फिर भी सन्तुष्ट न हो पाएंगे। किसी और चीज़ की इच्छा भड़क उठेगी। अर्थशास्त्र का यही आधार है, कहने का अभिप्राय है आधुनिक अर्थशास्त्र। परन्तु सहजयोग भिन्न है, सहजयोग का अर्थशास्त्र कहता है कि मुझे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है अब मुझे अन्य लोगों में इसे बाँटना है। यदि मुझे सन्तोष प्राप्त हुआ है तो अन्य लोगों के साथ भी इसका बाँटा जाना आवश्यक है।

सहजयोग में बाँटना अत्यन्त महत्वपूर्ण है और लोग इस कार्य को बखूबी कर रहे हैं। उस दिन मैंने आपको बताया था कि हमें प्रेम करने की कला सीखनी चाहिए। यदि आप कुछ मधुर बातें कह सकते हैं, प्रेम से लोगों को कुछ दे सकते हैं उनके साथ कुछ बांट सकते हैं तो यह कार्य बहुत सहज है। ऐसा करना आपके लिए कठिन नहीं है क्योंकि आपके पास आनन्द प्रदान करने के लिए आपकी आत्मा है। मैं जानती हूँ कि सहजयोग ने बहुत से चमत्कार किए हैं। रातोंरात लोगों ने नशे छोड़ दिए। अब अमेरिका में हमसे एक नशा उन्मूलन संस्था आरम्भ करने के लिए कहा गया है और सहजयोगियों ने कहा

कि हमारे पास दस लाख डॉलर हैं। क्या इतने पैसे से हम ये कार्य कर सकेंगे? उन्होंने कहा नहीं, नहीं, हम आपको दो सौ दस लाख डॉलर देंगे। मैंने उनसे कहा कि यदि आपको नशा उन्मूलन का ही कार्य करना है तो आप दो सौ दस लाख डॉलर लेकर क्या करेंगे। आवश्यकता तो ये है नशा त्यागने के लिए लोग आपके पास आएं। रातों रात वे नशा त्याग देंगे। मैंने ऐसे होते हुए देखा है और उनमें से कुछ लोग यहाँ बैठे हुए हैं। आपकी आत्मा में इतनी शक्ति है। उसमें इतना सौन्दर्य, इतना प्रेम और इतनी शान्ति है। केवल इसे अपने चित्त में रखना होगा क्योंकि यह चित्त इधर-उधर भटकता रहता है। आपका चित्त यदि आत्मा के प्रकाश से ज्योतिर्मय हो जाए तो आप अत्यन्त अद्‌भुत मानव बन सकते हैं। संस्कृत में जिस प्रकार वर्णित किया गया है काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह स्वत: ही छुट जाते हैं। जो क्रोध, मूर्खताएं और आक्रामक कार्य हम करते हैं वे सब छूट जाते हैं। कुछ सहजयोगियों को मैंने कश्मीर जाकर सहजयोग फैलाने के लिए कहा है। कश्मीर के लोगों को यदि आप सहजयोगी बना दें तो कश्मीर समस्या का हल हो सकता है। कुछ लोग वहाँ जाने के लिए तैयार भी हैं। कुछ विदेशी सहजयोगियों ने वहाँ जाकर लोगों को परिवर्तित करने के लिए अपनी सेवाएं भेंट की हैं। हमने बहुत से लोगों को परिवर्तित किया है। बेनिन नामक स्थान पर सात हजार मुसलमान लोग कि पहले बहुत धर्मान्ध थे अब सहजयोगी हैं। तुर्की में दो हजार सहजयोगी हैं तो हिन्दुओं, मुसलमानों, इसाईयों में जो धर्मान्धता है इसे भी आसानी से दूर किया जा सकता है। क्योंकि आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् वे लोग आत्मा के सौन्दर्य को देखेंगे और उनका अपना धर्म ही ज्योतिर्मय हो उठेगा। अपने धर्म के सौन्दर्य को वे देखेंगे। अपने धर्म की एकरूपता को वे देखेंगे और इस प्रकार एक सार्वभौमिक धर्म स्वीकार कर लिया जाएगा और उसमें सारे धर्मों को ठीक प्रकार से समझा जाएगा। सभी धर्मों के लोग कुछ पथभ्रष्ट हुए हैं और समस्याओं का यही कारण है। जब परमात्मा एक है तो धर्म के नाम पर क्या आप युद्ध कर सकते हैं? परन्तु अज्ञानतावश लोग ऐसा करते हैं। मैं उन्हें दोष नहीं देती क्योंकि वे अंधेरे में हैं। एक बार ज्योतित होते ही वे समझ जाएंगे कि सार्वभौमिक धर्म का स्वभाव क्या है? आप हैरान होंगे कि रूस में सहजयोग या विश्वनिर्मला धर्म को धर्म के रूप में मान्यता दी गई है। परन्तु यह और धर्मों की तरह से धर्म नहीं है। यह बिल्कुल उन जैसा नहीं है। इस धर्म में तो हम केवल प्रेम एवं करुणा में विश्वास करते हैं तथा अपनी शक्ति में भी कि कोई हमें छू नहीं सकता। कोई आपकी हत्या नहीं कर सकता। आपको हैरानी होगी कि तुर्की में बहुत बड़ा भूकम्प आया परन्तु किसी भी सहजयोगी को हानि न पहुँची। उनके घर भी ज्यों के त्यों रहे जबकि अन्य लोगों के घर धराशायी हो गए। ऐसा बहुत से स्थानों पर घटित हुआ है। बहुत से स्थानों पर चक्रवात आए परन्तु किसी सहजयोगी को हानि न पहुँची। सभी लोग मुझे बताते हैं कि श्रीमाताजी सब सहजयोगी बच गए। किस प्रकार वे सब पूरी तरह से ठीक हैं? क्योंकि आपको परमेश्वरी शक्ति की सुरक्षा प्राप्त है। हमें परमेश्वरी शक्ति में भरोसा करना चाहिए जिस पर सभी धर्मों ने भरोसा किया।

तब एक अन्य समस्या आती है कि हमें साकार में विश्वास करना चाहिए या निराकार में। आप समझ जाएंगे कि साकार के माध्यम से ही

निराकार को जाना जा सकता है। ये चीज़ देख लेना अत्यन्त साधारण बात है। परन्तु अत्यन्त आश्चर्यचकित कर देने वाले उदाहरण के रूप में एक बार मैंने कहा कि मक्का में मक्केश्वर शिव हैं ये बात हमारे धार्मिक ग्रन्थों में लिखी हुई है। मैंने तो बस यह बात कह दी थी। परन्तु अब मैंने एक लेख पढ़ा है कि वे सब भगवान शिव के पुजारी थे। परन्तु हैरानी की बात है कि मोहम्मद साहब ने कभी किसी धर्म के विषय में बात नहीं की। किसी ने ये बात नहीं पढ़ी, कुरान में भी नहीं। कुरान पर हमारे यहाँ एक बहुत अच्छी पुस्तक लिखी गई है। नि:सन्देह यह मेरे पथ-प्रदर्शन में लिखी गई है। इसमें स्पष्ट बताया है कि मोहम्मद साहब ने क्या कहा? इस प्रकार लोगों को अपयश मिलता है। आज इसाई लोग जो बात कह रहे हैं वह ईसा ने कभी नहीं कही। हिन्दू भी ऐसा ही कहते हैं। वे ऐसे कर्म कर रहे हैं जो कभी शास्त्रों में नहीं लिखे गए। धर्माधिकारी लोग ही धर्म के प्रतिरूप को बिगाड़ रहे हैं और समस्याएं खड़ी कर रहे हैं। मैं नहीं समझ पाती कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं? इसका क्या लाभ है। जहाँ तक साकार और निराकार का प्रश्न है इसे समझ लेना बहुत सुगम है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेने के पश्चात् आप स्पन्द को महसूस कर सकते हैं या ये कहें कि आपमें चैतन्य चेतना आ जाती है और इससे आप जान जाते हैं कि सत्य क्या है असत्य क्या है? मैं कहूँगी कि किसी शराबी द्वारा या धन कमाने की इच्छा से बनाई गई मूर्ति की पूजा करने में कोई सत्य नहीं। परन्तु बाइबल में भी कहा गया है कि आकाश या पृथ्वी माँ द्वारा सृजित चीज़ों का अपमान नहीं होना चाहिए। इन्हें हम स्वयम्भु कहते हैं परन्तु जो लोग आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं उनके लिए यह स्वयम्भु कर्मकाण्ड मात्र है। वे नहीं समझ पाते कि वे स्वयम्भु हैं या नहीं। सहजयोगी होने के नाते आप लोग जाकर स्वयम्भु देख सकते हैं और इन्हें स्वीकार कर सकते हैं। मैं जानती हूँ कि सन्त तुकाराम के स्थान पर आप लोग नृत्य कर रहे थे और आनन्द ले रहे थे क्योंकि आप वहाँ चैतन्य को महसूस कर रहे थे, चैतन्य लहरियों का आनन्द ले रहे थे। **अत: पहले आपको निराकार का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। तब आपको साकार का ज्ञान प्राप्त हो जाएगा।** इसके विषय में कोई विवाद नहीं है। परन्तु आप यदि साक्षात्कारी नहीं हैं तो आप किस प्रकार कह सकते हैं कि कौन स्थान स्वयम्भु है और कौन सा नहीं। तो सारी समस्या का समाधान हो जाता है। परन्तु पहले आपको ज्ञान प्राप्त करना होगा-चैतन्य लहरियों का ज्ञान। अब आप यदि मुझसे कोई गम्भीर प्रश्न पूछें जो हमारे देश में समस्या बना हुआ है और जिसके विषय में बताने का हमें अधिकार है। वह है श्रीराम मन्दिर का प्रश्न? क्या श्रीराम वहाँ पर पैदा हुए या नहीं। वे वहाँ पर जन्मे। इस बात को आप अपने हाथों पर महसूस कर सकते हैं। उन्होंने वहीं जन्म लिया। इसके विषय में कोई सन्देह नहीं है। इस बात को लेकर लड़ने की कौन सी बात है? वहाँ चाहे मस्जिद है या कुछ और। श्रीराम ने वहीं जन्म लिया। जो भी हो वहाँ पर चैतन्य लहरियाँ हैं। परन्तु उन्हें गौरवान्वित करने के लिए वहाँ मन्दिर अवश्य बनाएं। मन्दिर-मस्जिद एक ही बात है। अगर आप मन्दिर बनाना चाहते हैं तो अवश्य बनाएं परन्तु ऐसा केवल आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् करें उससे पहले नहीं और उस मन्दिर में पूजा के लिए केवल आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति को ही

रखें। तभी आप श्रीराम की महान आत्मा को गौरव प्रदान कर सकेंगे। यहाँ पर उपस्थित सभी लोग चाहे जिस भी देश से वो हैं श्रीराम को जानते हैं। केवल इतना ही नहीं, वे जानते हैं कि श्रीराम हमारे अन्दर कहाँ विराजमान हैं और यह भी कि किस प्रकार उनकी पूजा करनी है। ये लोग मोहम्मद साहब और ईसा मसीह के विषय में भी जानते हैं। उनके विषय में सत्य जानते हैं, अपने अन्दर, अपने शरीर के अन्दर। एक बार जब ये ज्ञान सच्चा ज्ञान प्राप्त हो जाएगा तो झगड़ने के लिए क्या रह जायेगा? हर आदमी को एक ही प्रकार का अनुभव होगा। फिर आप किसलिए झगड़ेंगे। मैं यदि कहती हूँ कि मेरा देश भारत योगभूमि है तो इसके विषय में आप इन लोगों से पूछें चाहें वो किसी भी देश के हों। सभी एक ही बात कहेंगे। यही कारण जब वे इस देश में आते हैं यहाँ की पृथ्वी को झुककर प्रणाम करते हैं। चाहे आप भारतीय ऐसा न करते हों। वो जानते हैं कि यह योगभूमि है और पूरे ब्रह्माण्ड की कुण्डलिनी इस योगभूमि में है। हमारे देश की ये सब महान बातें उन चैतन्य लहरियों के माध्यम से समझी जानी चाहिए जिन्हें आदिशंकराचार्य ने स्पन्द कहा। वास्तव में उनकी पूरी कविताएँ भी सामान्य लोगों को यह नहीं समझा सकतीं कि वास्तविकता क्या है? परन्तु यदि आप इन चीजों की गहनता में उतरें और अपने स्पन्द, चैतन्य लहरियों के माध्यम से पूर्ण ज्ञान को समझें तो आप जान जाएंगे कि सत्य क्या है? असत्य के लिए झगड़ने का क्या फायदा? यह तो अंधकार से लड़ने जैसा है क्यों न प्रकाश करके स्वयं चीज़ों को देखा जाए? श्रीमन, आज मैंने यह सब कहने का दुस्साहस किया है क्योंकि मैं आपको बताना चाहती थी कि हमारे इस देश में महानतम ज्ञान विद्यमान है। सहजयोग पूरी तरह से शास्त्र-सम्मत है यह कर्मकाण्ड नहीं है। यह गहन ज्ञान है। सभी सन्तों ने चाहे वो कबीर हों, गुरु नानक या मोहम्मद साहब, सभी ने कहा है 'अपने अन्दर खोजो'। उन्होंने ऐसा क्यों कहा? इसलिए क्योंकि सत्य, पूर्ण सत्य तो अपने अन्दर है और इसी पूर्ण सत्य से छोटी-छोटी मूर्खताएं दूर होंगी और आप विशिष्ट व्यक्तित्व मानव बन जाएंगे। पूरे विश्व के लिए परिवर्तित होने का समय आ गया है। परन्तु इसके लिए आप सबको बहुत सा कार्य करना होगा। मेरी आप सबसे प्रार्थना है कि मेरे लिए कार्य करें। जहाँ तक मुझसे हो सका मैंने इस कार्य को किया और निःसन्देह काफी कार्य हुआ। परन्तु आप सब इस कार्य को कर सकते हैं और अपने समाज, अपने देश और फिर पूरे विश्व को परिवर्तित कर सकते हैं। आप एक दूसरे की सहायता कर सकते हैं। उदाहरण के लिए कुछ लोग विदेशों से भारत आएं और कुछ भारतीय विदेशों में जाकर सहायता करें। अब आप लोग इस ज्ञान में दक्ष हो गए हैं आपको यह कार्य करना चाहिए। आस्ट्रेलिया से जो लोग उड़ीसा गए मैं उनका धन्यवाद करना चाहूँगी उन्होंने वहाँ सहजयोग के नौ केन्द्र स्थापित किए यह सब घटित हो रहा है और आप सब इस कार्य को कर सकते हैं। आत्मसाक्षात्कार देने की योग्यता आप सबमें है। यह वरदान जो आपको प्राप्त हुआ है, मेरी प्रार्थना है आप इसे आजमाएं और दूसरे लोगों में बांटें।

हिन्दी भाषा के महत्त्व पर बल देते हुए श्री माताजी ने कहा:-

थोड़ा अंग्रेजी में बोले क्योंकि यहाँ बहुत अंग्रेजी समझने वाले लोग हैं तो भी आप तो

समझ ही गए होंगे। तो भी मैं कहूँगी कि सबको अपनी राष्ट्रभाषा तो आनी ही चाहिए। कहीं से भी आप आए हों, यहाँ मैं जानती हूँ दक्षिण से भी बहुत लोग आए हैं, नेपाल से आए हैं, सब जगह से लोग यहाँ आए हैं. लेकिन राष्ट्र भाषा को जानना बहुत जरूरी है। मेरी मातृभाषा मराठी है जो कि बहुत बढ़िया भाषा है आध्यात्म के लिए। लेकिन तो भी हिन्दी भाषा, मेरे पिता जी ने कहा कि गर तुम्हें हिन्दी भाषा नहीं आएगी तो तुम बेकार हो। पहली चीज अपनी हिन्दी भाषा। इसलिए हिन्दी भाषा आपको सीखनी चाहिए। हिन्दी भाषा जब आप सीखेंगे तो इससे एक बड़ा भारी लाभ जो आपको होगा वो ये है कि हमारी संस्कृति के बारे में, हमारे गहन ज्ञान के बारे में हिन्दी भाषा में बहुत कुछ लिखा गया है, उसे आप पढ़िए, उसे पढ़ कर आप बहुत आश्चर्य चकित होंगे कि जो सहजयोग में लिखा है वो उसमें भी लिखा है। फिर गर आप हिन्दी नहीं जानते और गर आप अंग्रेजी में ही फँसे हुए हैं तो ये ज्ञान अंग्रेजी में खास है नहीं। क्योंकि अंग्रेज़ी भाषा के अपने दोष हैं। अंग्रेज़ी में spirit शब्द है spirit का माने शराब, spirit का मतलब भूत और spirit का मतलब आत्मा। ऐसी भाषा में आप क्या कर सकते हैं। तो आप लोग कम से कम हिन्दी भाषा सीखिए और इन सहजयोगियों को भी मैं सिखा रही हूँ परदेस में, कि ये एक हिन्दी भाषा सीखने से ये जो ज्ञान का भण्डार अपने देश में है उसको ये सीख लें/चाहे संस्कृत न सीखें लेकिन हिन्दी भाषा सीखना बहुत ज़रूरी है।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी की

दूल्हों को शिक्षा

छावला दिल्ली 23.3.2000

आप सबको यहां देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। आप सबको विदित होना चाहिए कि सहजयोग में विवाह करने के पश्चात् आपको एक भिन्न प्रकार का जीवन व्यतीत करना होगा। अन्य विवाहों तथा सहजयोग विवाहों में काफी अन्तर है। सहज विवाह में हमें समझना होता है कि यह एक प्रकार का पावन सम्बन्ध है जिसमें आपको अपनी पत्नी के साथ अत्यन्त सहज जीवन गुजारना होता है और उसे समझना होता है। वह भी सहजयोगिनी है इसलिए आवश्यक है कि आप उसका सम्मान करें और उसे प्रेम करें। वह समझ सके कि आप उसके हितचिन्तक, प्रेममय एवं भद्र पति हैं। उसके प्रति आपको अपना पूर्ण प्रेम दर्शाना होगा क्योंकि वह सहजयोगिनी है, सर्वसाधारण महिला नहीं। इस सम्मान के साथ मुझे आशा है कि आप लोग अत्यन्त सुखमय विवाहित जीवन व्यतीत करेंगे।

सहजयोग में जैसा होता है, हम परस्पर आलोचना नहीं करते। अत: क्षमा करना या किसी को बर्दाश्त करना उससे कष्ट सहना नहीं होता। आप क्षमा इसलिए करते हैं क्योंकि आप सहजयोगी हैं, श्रेष्ठ मानव हैं। अत: अपनी पत्नी में दोष निकालने का प्रयत्न न करें और न ही हर समय उसे आदेश देते रहें-ऐसा करो, वैसा करो, उसका हाथ बटाएं। सहजयोग में हम नहीं मानते कि किसी को दूसरे व्यक्ति पर रौब जमाने का अधिकार है। अत: आपको चाहिए उसकी सहायता करें, उसको समझें और समस्याओं में उसके सहभागी बनें। उसके लिए कठिनाइयाँ खड़ी करने के स्थान पर उसकी सहायता करें। वह आपकी साथी है, दास नहीं, न वो आपकी नौकर है और न ही आप उसके स्वामी। अत: सहजयोगियों में ये दुर्गुण नहीं होने चाहिए। एक दूसरे को समझना सर्वोत्तम है। उसके हृदय को भी समझने का प्रयत्न करें। कभी-कभी महिलाएं भिन्न संस्कृतियों और देशों से होती हैं इसलिए समझने का प्रयत्न करें। इसी प्रकार उसके देश की संस्कृति को आप समझ पाएंगे। पत्नी का सम्मान किया जाना बच्चों के लिए भी हितकर है। पत्नी के विषय में आपकी कुछ विशेष धारणाएं नहीं होनी चाहिए, जो भी धारणाएं (बन्धन) अब तक आपने बनाए हुए थे या जो आपने समाज में देखे थे उन्हें भूल जाएं। आप बिल्कुल भिन्न लोग हैं। सहजयोग के कार्य के लिए आप चुने गए हैं। यह बात भली-भांति समझ लें कि जिस लड़की से आपका विवाह होने वाला है और जो आपकी देखभाल करेगी वह सहजयोगिनी है। मैं उन्हें भी बताऊंगी कि उन्हें क्या करना है। पत्नी को परेशान करने के लिए पौरुषिक रौब अपने अन्दर न रखें और स्वयं को परिवार का मुखिया मानकर पत्नी को परेशान न करें। उसके सहभागी बनें, सहभागी बन जाने पर उसे समझने और उसकी सहायता करने में आपको आनन्द मिलेगा।

मुझे आशा है आपके विवाह अत्यन्त सफल होंगे और आपको अत्यन्त सुन्दर, मधुर और जन्मजात आत्मसाक्षात्कारी सन्तानें प्राप्त होंगी। मुझे विश्वास है कि आपका आने वाला जीवन अत्यन्त सुखमय होगा। अत: अपनी पत्नी को प्रसन्न करते हुए सभी लोगों को सुख देते हुए हर चीज़ को सहज ढंग से देखते हुए आनन्दमय जीवन के लिए प्रस्थान करें।

परमात्मा आपको धन्य करें।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी की

दूल्हनों को शिक्षा

छावला दिल्ली 23.3.2000

आप सब लोगों को इतने सुन्दर वस्त्रों में सुसज्जित देखकर बहुत अच्छा लगा। मैं आपको बताना चाहती हूँ आपका विवाह सजयोगियों से हो रहा है। यह बात आपने सदैव याद रखनी है। आजकल हम देख रहे हैं कि सहजयोग में भी विवाह टूट रहे हैं तथा ऐसा बहुत कुछ हो रहा है। परन्तु कभी-कभी तो केवल एक प्रतिशत ही विवाह टूटते हैं, सफल नहीं हो पाते। इसका कारण ये है कि वे सहजयोगी होने की अपनी जिम्मेदारी को समझते हैं। इसीलिए मैं चाहती हूँ कि आप सब लोग सदैव याद रखें कि आपका विवाह एक सहजयोगी से हुआ है और सदैव इस बात को याद रखें। आप उसका सम्मान करें, उसकी देखभाल करें और उसे प्रेम करें। हो सकता है कि कभी वह थोड़ा बहुत असन्तुलित हो जाए। बड़ी ही शान्ति से आपने उसे वापिस सन्तुलन में लाना है। सहजयोगियों के समाज को सुरक्षित रखना आपकी जिम्मेदारी है। लोग आपके घर में आएंगे सहजयोगी उनकी पत्नियाँ बच्चे। आपको उनकी देखभाल करनी होगी क्योंकि आप ही सहजयोगी समाज की कार्यभारी हैं, हो सकता है आप बहुत धन कमाती हो, बहुत ही अच्छी स्थिति में हों। परन्तु सदैव आपको ये बात समझनी चाहिए कि अपने विवाह के माध्यम से सहजयोग के कार्य को आपने चालू रखना है। यह बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है। यह सहजयोग समाज को सुरक्षित रखता है। अत: सभी को प्रेम करें सभी की देखभाल करें। कभी न सोचें कि यह आपका निजी घर है और आप वहाँ की साम्राज्ञी हैं। आप माँ हैं, बहन हैं और सहजयोगियों की सभी प्रकार से सम्बन्धी हैं। अत: जब भी वे आपके घर में आएं उनके प्रति पूर्ण सम्मान दिखाएं। अपने पति से कभी उनकी शिकायत न करें, उसे अच्छा नहीं लगेगा। सदैव याद रखें आपका धैर्य, आपका प्रेम, आपका पथ प्रदर्शन निश्चित रूप से आपके विवाहित जीवन को संवारेगा। आप यदि प्रसन्न रहना चाहती हैं तो आपको जानना होगा कि अन्य लोगों को किस प्रकार प्रसन्न रखें। दूसरों को यदि आप प्रसन्न नहीं रख सकती तो स्वयं भी कभी प्रसन्न नहीं हो सकतीं। अपनी आवश्यकताओं इच्छाओं और अपने ही विचारों के विषय में नहीं सोचना चाहिए। सभी कार्य अत्यन्त शालीनता से करने चाहिए क्योंकि आप भद्र महिला हैं।

आपकी शैली अत्यन्त शालीन होनी चाहिए। किसी पर आपको न तो चिल्लाना चाहिए न ही क्रोधित होना चाहिए और न ही किसी के साथ दुर्व्यवहार करना चाहिए। मैं तुरन्त जान जाती हूँ कि कठोर गृहणी कौन सी है? लोग मुझे बताते हैं कि श्रीमाताजी वह अजीब औरत है, लोगों से व्यवहार करना भी नहीं जानती। ऐसी बातें मैं सुनना नहीं चाहती। मैं सुनना चाहती हूँ कि आप बहुत ही मधुर और अच्छी पत्नी हैं जो अपने पति और सहजयोग परिवार की देखभाल करती हैं। आपका यही कार्य है। इसमें अपमानित महसूस करने की कोई बात नहीं।

सहजयोग में आपको ऐसा ही करना है। इसी कारण से आप इतने महत्वपूर्ण हो गए हैं। आप नहीं जानती कि महिला की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है, इतनी महत्वपूर्ण कि वह पूरे परिवार को एक सुन्दर बगिया में परिवर्तित कर सकती है। अपने माधुर्य से, अपने प्रेममय सृजनात्मक मस्तिष्क से वह ये कार्य कर सकती है। अपनी प्रेम की कला को खोज निकालें और इसका उपयोग उन पर करें जो परेशान हों या नाराज हों या बिगड़े हुए हों। आप ऐसा कर सकती हैं। उस व्यक्ति को शान्त करना तथा उसे प्रभावित करना आपको आना चाहिए।

चारित्रिक उदारता आपका प्रथम गुण होना चाहिए। किसी को यदि किसी चीज़ की आवश्यकता है तो आपको चाहिए कि उसे वो दे दें। अब आपको अपनी उदारता का आनन्द आएगा। दूसरे लोगों को क्षमा करते हुए भी आप लोगों को उदार होना है। क्षमा बहुत ही महत्वपूर्ण है, इससे आपको अपना विवाहित जीवन बोझिल नहीं लगेगा।

क्षमा करें, स्वयं को भी क्षमा करना। किसी भी चीज़ के लिए स्वयं को दोषी न मानें, क्योंकि आप भी तो सहजयोगी हैं। आपसे भी यदि कोई गलती हो गई है तो कोई बात नहीं। परन्तु आपमें माधुर्य होना चाहिए। एक पत्नी का माधुर्य जो दूसरे लोगों को भी प्रेम एवं शान्ति प्रदान कर सके। आपको न तो रौबीला होना है और न तो आक्रामक, बिल्कुल भी नहीं। इसके विपरीत आप लोग तो बहुत कुछ सहन कर सकते हो और किसी भी मूर्खता को मज़ाक में परिवर्तित कर सकते हो। कोई भी चीज़ इतनी गम्भीर नहीं होती कि उसके लिए झगड़ा किया जाए। ये सब बातें तो हँसने के लिए होती हैं। प्रसन्नचित्त होकर आपको सदा मुस्कराते रहना है। आपका विवाह आपके लिए आपके पति के लिए, सभी सहजयोगियों के लिए बहुत सुन्दर साबित होगा। मुझे पूरा विश्वास है कि आपके विवाह यदि सफल होंगे तो आपको अत्यन्त सुन्दर जन्मजात साक्षात्कारी बच्चे होंगे। अतः आप अपने बच्चों तथा अन्य बच्चों के लिए बहुत अच्छी माताएं साबित होंगी। ये सब भविष्य के गर्भ में आपके लिए निहित है। मैं जानती हूँ कि आप सब अपने आगामी जीवन का बहुत आनन्द लेंगी और इसे इतना सुन्दर बनाएंगी कि सभी लोग कहेंगे इन सहयोगिनियों को देखो, ये कितनी महान हैं। इनके जीवन कितने खुशहाल हैं। हमें अपनी गलतियों पर चित्त देना चाहिए और उन्हें सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए, दूसरों पर नहीं। लोगों में स्वयं को सुधारने की योग्यता है। आप केवल इनके हित की इच्छा करें और उनके प्रति अत्यन्त स्नेहमय एवं विनम्र हों। मुझे विश्वास है कि आप सब इतने अच्छे परिवार बना सकते हैं जो देखने में नहीं आते। अतः परिवार में पति के बारे में या किसी अन्य के बारे में पति से कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए। स्वयं को इतना मधुर बनाएं कि सभी लोग आपका प्रेम एवं पथ प्रदर्शन पाना चाहें और इसके लिए आपके पास आएं। मुझे आशा है आप ऐसा कर सकते हैं। बहुत सी सहजयोगिनियों ने मेरा नाम रोशन किया है, उन्होंने बहुत अच्छा कार्य किया है। आपसे भी मैं यही आशा करती हूँ। परमात्मा आपको धन्य करें।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी जी का प्रवचन
लन्दन - 15.10.79

आत्मसाक्षात्कार को किस प्रकार विकसित किया जाए

जिन लोगों ने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लिया है, जिन्होंने चैतन्य लहरियाँ महसूस कर ली हैं उन्हें समझना चाहिए कि उनका विकास एक दूसरे अस्तित्व में हो रहा है। अंकुरण आरम्भ हो चुका है और आपको चाहिए कि इस अंकुरण को अपने ही प्रकार से कार्य करने दें। परन्तु प्रायः जब हमें आत्मसाक्षात्कार मिलता है तो भी हम ये नहीं समझ पाते कि हमारे अन्दर यह कितना महान कार्य हो गया है तथा यह असम्भव घटना हमारे अन्दर घटित हो चुकी है और इसे अब शनैःशनैः कार्य करना है। विकसित होकर इसे हमारा उत्थान करना हैपरन्तु अपने आत्मसाक्षात्कार को हम उतनी गम्भीरता से नहीं लेते। जिन लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है वे भी उनसे घिरे रहते हैं जिन्हें चैतन्य लहरियों का अनुभव नहीं हुआ, वे इस क्षेत्र को नहीं जानते, इसे उन्होंने कभी नहीं देखा। जैसे गुरुनानक ने कहा यह अलख है। उन्होंने इसे नहीं देखा, इसके विषय में वे कुछ नहीं जानते, ये नहीं जानते कि परमात्मा की शक्ति विद्यमान है, यह सब समझती है, समन्वय करती है, आपके साथ सहयोग करती है, सामूहिक अस्तित्व में जो कार्य कर रही है। आपको तथा अन्य लोगों को सामूहिक अस्तित्व की चेतना प्रदान करती है। यह अलख है या कह सकते हैं अपरोक्ष है, जिसे हम देख नहीं सकते, जिसके विषय में कोई कुछ नहीं जानता। सन्तों ने इसके विषय में बातचीत की परमात्मा के विषय में कहा। उन्होंने परमात्मा की शक्ति की बात की। दिव्य शक्तियों के बारे में बताया। परन्तु ये सब बातें ही बातें हैं। एक बार जब आप इसमें आ जाएं तो **इसकी गहनता में उतरना होता है। यदि आप इसकी गहनता में नहीं उतरते तो आपको छोड़ दिया जाएगा।** विशेष रूप से उन लोगों को जो कुगुरुओं या असत्य चीज़ों को मानते रहे हैं। वे नहीं जानते कि ये चीज़ें कितनी भयानक हैं! मानो आप मगरमच्छ पर खड़े हों और अचानक आपको पता लगे कि यह मगरमच्छ है तो आप उससे कितनी दूर भागेंगे? परन्तु ये समझ भी, कि यह मगरमच्छ है जो आपको खा जाएगा, आसानी से नहीं आती। व्यक्ति वैसे ही इसे महसूस नहीं करता जैसे आप लोग ये महसूस नहीं करते कि आपके साथ कितनी कठिन घटना घटित हो चुकी है। ये कठिन है फिर भी आपके साथ यह घटित हो चुकी है। समझें कि आपके साथ ही यह क्यों घटित हुआ। आप इसे अपना अधिकार मान लेते हैं और बुरी चीज़ों को भी। कम से कम बुरी चीज़ों को तो अपना अधिकार न मानें। जितना जल्दी हो सके उनसे दूर दौड़ जाएं। ध्यान करें, ध्यान-धारणा द्वारा स्वयं को परमात्मा के प्रेम के साम्राज्य में स्थापित करने का प्रयत्न करें। मैं कहती हूँ ये परमेश्वरी प्रेम है। आप नहीं समझ सकते कि ये परमेश्वरी प्रेम क्या है। आप किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं समझ सकते जो आपसे निर्वाज्य प्रेम करता है-केवल प्रेम की खातिर वह आपसे प्रेम किए चला जाता है

क्योंकि प्रेम करने में उसे आनन्द प्राप्त होता है। संस्कृत में इसे अव्याज कहा गया है अर्थात जिसमें कोई ब्याज नहीं है जो निरंतर बहता है **यदि ये आपको सुधारता है तो भी केवल प्रेम के कारण। परमेश्वरी प्रेम की सुरक्षा ही उत्थान का एकमात्र मार्ग है** यही प्रेम आपको आवश्यक ऊर्जा शक्ति तथा विश्वास प्रदान करता है। यही परमेश्वरी प्रेम आपको सब कुछ देता है। अत: व्यक्ति को महसूस करना चाहिए कि प्रेम, केवल प्रेम, ही सारी सृष्टि का आधार है। परमात्मा ने इस विश्व की, इस ब्रह्माण्ड की सृष्टि की है, केवल इसलिए कि वह आपसे प्रेम करता है तथा अपने प्रेम के कारण आप पर अपने आशीर्वादों की वर्षा करना चाहता है। परन्तु समस्या ये है कि आप स्वयं से कितना प्रेम करते हैं, स्वयं को कितना समझते हैं। **यद्यपि आपकी कुण्डलिनी जागृत हो चुकी है आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो चुका है, चैतन्य लहरियाँ आपसे बह रही हैं फिर भी आप अपना मूल्य नहीं आंकते, क्योंकि आपका चित्त बाहर की ओर है और आत्मसाक्षात्कार के बाद भी चित्त बाहर ही बना हुआ है। कभी-कभी यह अन्दर जाता है और फिर बाहर को आ जाता है। अपनी पुरानी आदतों को हम नहीं छोड़ते उनसे चिपके रहते हैं। हमारा जीवन ढर्रा, हमारी विचारशैली वही बनी रहती है। इसी बीहड़ में हम खोए रहते हैं।**

सहजयोग आपको आत्मसाक्षात्कार देता है ठीक है। परन्तु फाँसी लगाने के लिए यह आपको लम्बी रस्सी भी देता है। आप यदि अपनी और अपने अस्तित्व की ओर ध्यान नहीं देते, स्वयं को यदि आप प्रेम नहीं करते और ये नहीं समझते कि आप परमात्मा के यन्त्र हैं जिसके द्वारा आपने अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार देना है तो आप स्थापित न हो पाएंगे। आप लोगों को डूबने से बचाएंगे। पहली बार आपको इस प्रकार बनाया गया है जो योग्यता आज आपमें है वह इससे पूर्व न तो आपमें थी और न ही अन्य मनुष्यों में, बहुत कम लोगों में ये योग्यता थी बहुत ही कम लोगों में। परन्तु अब आपको यह योग्यता प्रापत हो गई है। फिर भी आप अपना मूल्यांकन नहीं करना चाहते। यह कार्य कितना महत्वपूर्ण है इस बात को आप यदि महसूस करेंगे तो कार्य कर सकेंगे। बसन्त को आने दें। आज क्योंकि आप सब सहजयोगी मेरे सम्मुख हैं मैं आपसे इस प्रकार बात कर सकती हूँ। **इस कार्य को आगे बढ़ाने के स्थान पर मैं देखती हूँ कि आप अपनी कुण्डलिनी के उतार-चढ़ाव पर दृष्टि नहीं रखते। आप यदि यह देखने का प्रयत्न करें कि केवल आपकी कुण्डलिनी ही आपको सबसे अधिक प्रेम करती है क्योंकि वह आपकी अपनी माँ है, और उस पर चित्त रखें तो आप देखेंगे कि वे बताती हैं कि समस्या कहाँ है?** समस्या क्या है? आपको सुधारना है और आपको क्या करना है? वह आपको पूर्ण करना चाहती है और आपकी सहायता करना चाहती है। अत: यदि आप इसे सावधानीपूर्वक, प्रेम से, सूझ-बूझ से देखने लगे तो यह अत्यन्त मधुर, लीलामय बाल सुलभ सुन्दर लीलाओं से परिपूर्ण है। आपका ध्यान आकर्षित करने के लिए यह आपको शरीर पर यहाँ-वहाँ गुदगुदाती है। किसी प्रकार का कष्ट नहीं देती। इसके विषय में आपको चुस्त रहना है और वास्तव में ये आपको परिपक्व कर देगी।

आपने देखा है कि किस प्रकार समय के साथ-साथ लोग परिपक्व हुए हैं। **परन्तु आपको अपना चित्त कुण्डलिनी की ओर और अपनी ओर रखना होगा अन्यथा बिना ज्योतिर्मय हुए आपका मूल्य क्या है? आत्मसाक्षात्कार के बिना मनुष्य का मूल्य क्या है?** मानव को यदि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त नहीं है तो उसका क्या लाभ है? इस यन्त्र (Microphone) का क्या लाभ है यदि यह अपने स्रोत से जुड़ा हुआ नहीं है तो? बाकी सब कुछ व्यर्थ है और जिस प्रकार हम गैस लैम्प जलाते हैं वैसे ही लोगों को प्रकाशमय करना है। गैस लैम्प जलाने के लिए व्यक्ति दौड़ता है। केवल उसी में यह कार्य करने की शक्ति एवं योग्यता है। अत: वह गली में गैस लैम्प जलाने के लिए दौड़ पड़ता है। उसी व्यक्ति ने यह कार्य करना है, इसी के लिए उसकी नियुक्ति की गई है।

सहजयोगियों को ये समझना अत्यन्त आवश्यक है कि उनका मूल्य क्या है। सहजयोग के विषय में आपने क्या समझा है? कितने लोगों को आपने बचाया है, कितने लोगों की आपने सहायता की है? आपकी अपनी ही समस्याएं इतनी अधिक हैं फिर भी आप बातचीत, वाद-विवाद बहस करके अन्य लोगों के लिए समस्याएं खड़ी कर रहे हैं। **सहजयोग के विषय में न तो आप बहस कर सकते हैं, न तो वाद-विवाद, इसे तो स्वयं कार्यान्वित होना होगा।** वाद विवाद, बहस, बतंगड़, नाप तोल द्वारा स्वयं को भ्रमित करके आप अपनी कुण्डलिनी के कार्यान्वित होने में बाधाएं खड़ी करती हैं। क्या आप आत्मा को नहीं खोज रहे हैं? क्या आप मोक्ष प्राप्ति के लिए चिन्तित नहीं हैं? यदि हैं तो इसकी प्राप्ति के लिए क्या कर रहे हैं यह अत्यन्त महत्वपूर्ण चीज़ है। **मेरे विचार से हर आदमी समझता है कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना ही अन्तिम उद्देश्य नहीं है क्योंकि यह मात्र अंकुरण है। आपको इससे बहुत आगे जाना है। जिन लोगों ने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त नहीं किया है, उनके प्रति आपमें करूणा होनी चाहिए। उनके विषय में आपको सोचना चाहिए, उन्हें आत्मसाक्षात्कार देना चाहिए।** इस कार्य को कार्यान्वित करना चाहिए और इस पर अपना मस्तिष्क लगाना चाहिए। परन्तु अब भी मैं देखती हूँ लोग अन्य चीज़ों में व्यस्त हैं। वे लौटकर अपने पुराने साथियों में चले जाते हैं। आपको व्यस्त होना चाहिए, मैं नहीं कहती जीविकार्जन के लिए आपको कुछ नहीं करना चाहिए, आपको कार्य करना चाहिए। परन्तु **ये समझ लेना हम सब लोगों के लिए महत्वपूर्ण है कि हमें सहजयोग को कार्यान्वित करना है और आत्मसाक्षात्कार को अपने अन्दर विकसित होने देना है। परन्तु यदि आप कहते हैं कि श्रीमाताजी आपमें हमारा पूर्ण विश्वास है तो ये कहना काफी नहीं है। मुझ पर आपका क्या विश्वास है, विश्वास का आप क्या अर्थ समझते हैं? यह अत्यन्त अस्पष्ट शब्द है। आखिरकार विश्वास है क्या? क्या आपने कभी अपने विश्वास का विश्लेषण किया। कुछ लोग सोचते हैं कि यदि हम श्रीमाताजी के भजन गाते हैं तो उनमें हमारी पूर्ण श्रद्धा है। इसके लिए हमें आदिशंकराचार्य की तरह एक विशेष स्थिति प्राप्त करनी होगी। क्या अपने आपमें आपका विश्वास है? ये बात आवश्यक है। जिसका विश्वास अपने आप में नहीं है वह कैसे मुझमें विश्वास कर सकता है। आपको स्वयं पर तथा अपने सभी**

साथियों, सहजयोगियों पर विश्वास करना होगा। **मैंने आपको पहले भी बताया है कि व्यक्तिगत स्तर पर सहजयोग कार्यान्वित न होगा। कोई यदि स्वयं को अन्य लोगों से महान मानता है तो उसका पतन अवश्यम्भावी है।** किसी भी व्यक्ति को इस प्रकार केवल अपने लिए सहजयोग का उपयोग नहीं करना चाहिए। सामूहिक रूप से सभी लोगों के लिए आपको कार्य करना चाहिए। **आपमें से कोई भी यदि ये सोचता है कि उसमें अन्य लोगों की अपेक्षा कुछ श्रेष्ठता है तो वह भयानक गलती कर रहा है।** यह तो ऐसा ही हुआ कि मानो एक आँख कह रही हो कि मैं दूसरी से श्रेष्ठ हूँ या नाक ये कह रही हो कि मैं आँखों से श्रेष्ठ हूँ। **विराट के शरीर में हर चीज़ का अपना स्थान है और हर व्यक्ति अत्यन्त महत्वपूर्ण भी है और अनावश्यक भी।** आप जानते हैं कि सहजयोग में क्या होता है, भारत में ये आम बात है, यहाँ पर इतनी नहीं है। भारतीय इसे इसी प्रकार करते हैं, उनमें बहुत से गुण हैं। जहाँ भी मैं जाती हूँ मुझे लगता है कि लोग पहले से अधिक परिपक्व और विकसित हुए हैं क्योंकि वह आप लोगों की तरह विचारशील नहीं है। आप लोग महान विचारशील, दृष्टा, बुद्धिवादी हैं। मैं सोचती थी कि सभी बुद्धिवादियों के माथे पर सींग निकल आएंगे और उन्हें देखते ही पता लग जाएगा कि वे बुद्धिवादी हैं जो परमात्मा की और उसके मार्गों की निन्दा करते हैं। भारतीय बुद्धिवादी नहीं हैं। परन्तु कुछ मामलों में आप असफल हैं। उनके मस्तिष्क में सदैव यही बात होती है कि 'मैं महान हूँ' 'मैं ये हूँ' 'मैं वो हूँ'। ऐसा व्यक्ति सदैव यही राग अलापता रहता है और अन्य लोगों को नीचा दिखाने का प्रयत्न करता है। अचानक ऐसे व्यक्ति का पतन हो जाता है और लोगों को आघात पहुँचता है, "श्रीमाताजी यह क्या हुआ।" आप ऐसा नहीं कर सकते। आपने यदि कालीन को इस प्रकार बिछाया है तो आप इसके एक सिरे को नहीं खींच सकते पूरा कालीन ही आपको खींचना होगा। पूरे खेल का श्रेय केवल एक व्यक्ति नहीं ले सकता। आप मेरे को लें। आप जानते हैं कि मेरे अन्दर सभी शक्तियाँ हैं, सभी कुछ हैं। मुझे सबसे ऊँचा होना चाहिए आदि आदि। परन्तु आप लोगों के सम्मुख मुझे अपना स्तर नीचा करना पड़ता है। आपके साथ शिखर पर पहुँचने के लिए मुझे संघर्ष करना पड़ता है। हाथ में हाथ डालकर हम लोगों को चलना होता है। आप यह सब जानते हैं। **किसी व्यक्ति का कोई चक्र पकड़ रहा होता है तो मैं अपना चक्र कार्य पर लगा देती हूँ। यह इसी प्रकार कार्यान्वित होता है परन्तु आप जानते हैं कि मुझे कितना कठोर परिश्रम करना पड़ता है। यह बहुत बड़ा काम है-आत्मसाक्षात्कार देना।** मेरी कुण्डलिनी को किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है। आप यह बात जानते हैं। परन्तु मेरी कुण्डलिनी को आपकी भारी कुण्डलिनियों का बोझ उठाना होता है। इन्हें जागृत करना होता है। यह बहुत भारी काम है। केवल प्रेममय व्यक्ति ही इसे कर सकता है। यही मापदण्ड है। प्रेमविहीन व्यक्ति इस कार्य को नहीं कर सकता। इस कार्य को करना बहुत कठिन है। मैं यदि सारे शरीर में भी प्रवेश कर जाऊं, हर केन्द्र से चैतन्य प्रवाह कर दूँ तो भी यह आसान नहीं है। परन्तु यह तो आप लोगों और मेरे बीच मात्र प्रेम एवं स्नेह है जो मुझे अच्छा लगता है और जो सारे कार्य, सारे परिश्रम को संपन्न करता है। कई वार तो मैं ऐसे

लोगों के विषय में सोचती हूँ और परिश्रम करती हूँ जो बिल्कुल बेकार होते हैं। उन पर किया गया परिश्रम बिल्कुल व्यर्थ होता है। फिर भी जो प्रेम हमें परस्पर समीप लाया है वह अत्यन्त सन्तोष प्रदायी है और इसके कारण आप प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। हर सुबह आप अपने अन्दर एक नई सुगन्धी लेकर उठते हैं और इसके विषय में आपको खुशी होती है। अतः **लोगों से व्यवहार करते हुए बहुत सावधान रहें। अत्यन्त प्रेमपूर्वक उनसे व्यवहार करें। किसी भी प्रकार से न तो उनकी आलोचना करें और न ही उन्हें नीचा दिखाने का प्रयत्न करें।** आप जब किसी प्रकार किसी से ऊँचे नहीं हैं तो ऐसा करने का कोई कारण नही है। आप यदि ऊँचे हों भी तो सामूहिक अस्तितव की सहायता करने के लिए होते हैं परन्तु ऐसी स्थिति में **आपके अन्दर यदि दूसरों से ऊँचा होने की भावना आ जाती है तो आपका पतन आरम्भ हो जाता है** क्योंकि इस प्रकार आप सामूहिकता को पतन की ओर खींच रहे हैं। आप यदि किसी की निन्दा करते हैं या किसी को नीचा दिखाते हैं तो आप स्वयं को पतन की ओर खींच रहे हैं। **दूसरों का दोष सुधार भी आपको नहीं करना है क्योंकि इस कार्य के लिए तो मैं हूँ।** दूसरों को सुधारना आसान काम नहीं है। आप उन्हें चोट पहुँचा सकते हैं। लोगों को सुधारने का तरीका भी आप नहीं जानते हैं। जब तक आपके अन्दर से शक्तिशाली चैतन्य लहरियाँ बहनी शुरू नहीं हो जाती तब तक आप लोगों को केवल प्रेम करें। अहम् संचालित सामाजिक संस्कारों के कारण लोगों को दुख पहुँचाना और उन पर प्रभुत्व जमाना आप अच्छी तरह से जानते हैं। आपको पता भी नहीं चलता कि आप लोगों पर रौब जमा रहे हैं। बहुत से सूक्ष्म तरीकों से हम लोगों पर प्रभुत्व जमाते हैं। इस प्रकार हम उनसे बातचीत करते हैं कि उन पर रौब पड़े। क्या कभी हम बैठकर यह सोचते हैं कि हमें किस प्रकार लोगों से बातचीत करनी है जिसमें उन्हें हमारे प्रेम का आभास हो? **मैं आपको बार बार बताती हूँ कि सहजयोग कुछ भी नहीं है केवल प्रेम है, प्रेम, केवल प्रेम।** मुख्य चीज यह है कि आप लोगों को कितना प्रेम करते हैं। तिरस्कार या आलोचना करना कोई तरीका नहीं है। कल आप भी वैसे ही थे। आज आप बेहतर हैं, भविष्य में इससे भी अच्छे होंगे। मान लो कुछ लोग बहुत ही कष्टदायी हैं तो आपको चाहिए कि उनसे स्पष्ट बता दें कि **'श्रीमन क्षमा कीजिए, अभी आपको काफी शुद्धीकरण की आवश्यकता है। कुछ चालाक लोग भी होते हैं जो आकर आपको परेशान करने का प्रयत्न करेंगे। कुछ हद तक उन्हें सहन करें, अन्यथा उनसे क्षमा माँग लें।** परन्तु **ये जानने के लिए कि क्या व्यक्ति नकारात्मक है, आप उसके विषय में सोचते हैं, तार्किक दृष्टि से उसे देखते हैं। तार्किक दृष्टि से न देखकर उसे चैतन्य लहरियों के माध्यम से देखना चाहिए क्योंकि तर्कबुद्धि से वह महिला या पुरुष अच्छा प्रतीत होता हो परनतु वह अत्यन्त नकारात्मक हो सकता है। अतः आप कितनी ध्यान धारणा करते हैं, इसका अर्थ यह है कि आप कितना प्रेम करते हैं।** जब आप दूसरों के विषय में सोचते हैं तो सोचें कि आप उनसे कितना प्रेम करते हैं। ऐसा करने का प्रयत्न करें और देखें कि यह कितनी सुन्दर चीज है। यदि प्रेम नहीं है तो घृणा है। यह झुलसाने वाली गर्मी है जो सारे सौन्दर्य को

समाप्त कर देगी, आपके हृदय की सारी कोमलता को नष्ट कर देगी।

केवल प्रेम द्वारा ही सहजयोग फैलेगा। इन सारे वर्षों में आपने घृणा की शक्ति को देखा है। आपने देखा है लोग किस प्रकार घृणा करते हैं। किस प्रकार एक दूसरे से व्यवहार करते हैं, उनमें न तो मृदुता है और न करुणा। एक दूसरे से वे कितने तीखे हैं। अब आपको यह सब परिवर्तित करना होगा और एक ऐसे विश्व की सृष्टि करनी होगी जहाँ लोग परस्पर प्रेम करते हों, धन, पद, सौन्दर्य और वासना के लिए नहीं केवल प्रेम के लिए। केवल इसलिए कि आपको प्रेम का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। अगली बार से हम विज्ञापन देंगे और बहुत से लोग सहजयोग में आएंगे परन्तु आप सब भी देखें कि आप अपने साथ कितने लोगों को ला सकते हैं। ऐसी चीजों पर अपना मस्तिष्क लगाएं। हर समय हम नौकरी आदि के विषय में सोचते रहते हैं। यह बहुमूल्य समय है हमें इसे खोना नहीं चाहिए। अपने पूर्ण जीवन हमने नौकरियाँ करने, पैसा कमाने, विवाह करके बच्चे बनाने और फिर मर जाने में लगा दिए। इस जीवन काल में आइए कुछ विशेष करें जिसके लिए इस ब्रह्माण्ड का सृजन किया गया है। अन्य लोगों के लिए स्वर्ग के द्वार खोल दें। आपको अत्यन्त परिश्रमी होना है। आप भली भांति जानते हैं कि सहजयोग में कोई मजबूरी नहीं है। इसके लिए कोई समय नहीं है यह किसी पर थोपा नहीं जा सकता क्योंकि यह तो केवल प्रेम है; आप यदि इसे नहीं करना चाहेंगे तो कोई आपको विवश नहीं करेगा, परन्तु जैसा मैंने बताया; फाँसी लगाने के लिए सहजयोग बड़ी लम्बी रस्सी देता है। जब तक आप पूर्णतः भ्रम में नहीं फँस जाते और आपके अन्दर चैतन्य लहरियाँ समाप्त नहीं हो जातीं, यह इस सीमा तक है। हमने यदि किसी अभूतपूर्व चीज़ में प्रवेश किया है तो हमें अभूतपूर्व विधियाँ भी अपनानी होंगी। आप पहले की तरह से नहीं चल सकते; आपको अपने तरीके बदलने होंगे और प्रेम द्वारा अपने कार्यों को आँकना होगा। दूसरों के लिए आप कितना बलिदान करते हैं? दूसरों के लिए क्या न्यौछावर कर सकते हैं? दूसरों की आप क्या सेवा कर सकते हैं। मेरा कहने से अभिप्राय है सहजयोगियों की। इसमें कोई बलिदान नहीं है। आप यदि ध्यान से देखें तो यह बलिदान नहीं है यह प्रेम है। किसी से आप प्रेम करते हैं उसके लिए गुलाब का फूल ले जाना चाहते हैं और कठिनाई से बाज़ार जाकर जब आपको फूल मिलता है तो आपको बहुत प्रसन्नता होती है। गुलाब का काँटा आपकी उंगली में लग जाता है उंगली से खून निकलता है फिर भी आपको बुरा नहीं लगता। आप उस व्यक्ति से मिलने की प्रतीक्षा करते रहते हैं और जब वह मिलता है तो आप अपनी सारी तकलीफें भूलकर प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति करने के लिए वह फूल उसे देते हैं। कितनी प्रसन्नता आपको होती है कि आप उसे वह फूल भेंट कर सके। अपने जीवन में हम ऐसा प्रतिदिन करते हैं परन्तु सहजयोग में बिना जाने आप यह सब करते हैं ऐसा हो रहा है। **आप लोग संचारक हैं जहाँ भी आप ध्यान धारणा में बैठते हैं आप चैतन्य लहरियों का संचार करते हैं।** क्या आप ये बात जानते हैं। **उस समय भी यदि आप नौकरियों तथा अन्य चीज़ों के विषय में सोचते हैं पहले कि तरह तो ये संचार कम हो जाता है। प्रेम के विषय में सोचें। उस समय पूरे देश के पूरे विश्व के विषय में सोचें।** आप लोग इन प्रेम

लहरियों के प्रेषक हैं और आपके अन्दर से प्रेम बहेगा।

मैंने आपको एक बार बताया था कि आपको श्रीगणेश की तरह से बनाया गया है और आपको उन्हीं की तरह से कार्य करना है आप जानते हैं कि आपके अन्दर से चैतन्य लहरियाँ निकल रही हैं। इसका अर्थ ये है कि आप किसी देवता की तरह हैं जो पृथ्वी माँ के गर्भ से प्रकट हुआ है और उस पर बहुत बड़ा मन्दिर बना दिया गया है जहाँ उस देवता की पूजा करने के लिए हजारों लोग जाते हैं। लोग कहते हैं कि यह जागृत देवता का मन्दिर है अर्थात् ज्योतिर्मय है और वह तो केवल एक पत्थर होता है। एक पत्थर जो पृथ्वी के गर्भ से निकलता है जिसके ऊपर लोग मन्दिर बना देते हैं और वहाँ पूजा के लिए जाते हैं। और यहाँ तो बहुत सी आत्मसाक्षात्कारी आत्माएं बैठी हुई हैं। ये जीवित हैं चलती-फिरती हैं और सब कुछ समझती हैं। स्वयंभू प्रतिमाओं से तो केवल चैतन्य लहरियाँ निकलती हैं जो वातावरण को पवित्र करती हैं परन्तु आप लोग तो कुण्डलिनी उठा सकते हैं स्वयंभू प्रतिमाएं कुण्डलिनी नहीं उठा सकती, आप उठा सकते हैं। परन्तु आप इस कार्य के लिए क्या कर रहे हैं? आपके पास इतनी बहुमूल्य चीज है आप इसका क्या कर रहे हैं? क्योंकि इसमें व्यापार नहीं है? क्या इसी कारण से हम इसकी बात इतनी धीरे से करते हैं। यदि यह उद्यम होता तो हर व्यक्ति इस कार्य को करने के लिए उद्यत हो जाता। हमें अपने तौर तरीके और सूझ बूझ बदलनी होगी। कोई भी उद्यम जो फल आपको देता है उसकी अपेक्षा परमात्मा हजारों गुना फल देते हैं। जब वे आपको आशीर्वाद देते हैं तो उन्हें धन्यवाद करने के लिए आपके पास शब्द भी न होंगे। वह तो इस सीमा तक जाते हैं। **क्या हम परमात्मा पर निर्भर कर रहे हैं या अपने पुराने तौर तरीकों पर हमें बहुत परिवर्तित होना पड़ेगा।** नई शैली में अपनी सोच को बदलना होगा। यह बात अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

मुझे आशा है कि आप इसके विषय में सोचेंगे जो बातें आज आपको मैंने कहीं है उनके विषय में। जिन चीजों ने आपको खुशियाँ नहीं दी उन चीजों को अपने जीवन में न अपनाएं। **सहजयोगी आपके मित्र हैं। अपने मित्र बदलें, जीवन के तौर तरीके बदलें। आपको कहीं अधिक आनन्द प्राप्त होगा।** अपने आपको तथा सहजयोग के महत्व को समझना आप पर निर्भर करता है। जब तक ये उद्यम नहीं है कोई भी इसे गम्भीरता पूर्वक न लेगा। पाश्चात्य सोच की यही शैली है। यह उद्यम होना चाहिए-सच्चा उद्यम हो या उल्टा-सीधा, कोई बात नहीं। धन का हेर-फेर यदि हो तो सभी लोग खड़े हो जाते हैं और उस कार्य को करते हैं परन्तु जब सहजयोग की बात आती है तो उनके पास ध्यान धारणा के लिए भी समय नहीं है! क्योंकि अभी तक हमने प्रेम करना नहीं सीखा है। अपने अन्दर उस प्रेम का अनुभव नहीं किया है। मैं कामना करती हूँ कि आप सब अपने अन्दर प्रेम की उस गहनता का अनुभव कर सकें, तब आप अपने लिए तथा अन्य लोगों के लिए इसे कार्यान्वित करने की ख़ातिर जी जान से जुट जायेंगे।

परमात्मा आपको धन्य करें।

ध्यान की आवश्यकता

27-11-91 दिल्ली आश्रम

आज आप लोगों से बहुत देर बाद मुलाकात हो रही है और सहज योग के बारे में हम लोगों को समझ लेना चाहिए। सहज योग, ये सारे संसार की भलाई के लिए इस संसार में उत्पन्न हुआ है। और उसके आप लोग माध्यम हैं। आपकी जिम्मेदारियाँ बहुत ज्यादा हैं क्योंकि आप इसके माध्यम हैं। और कोई नहीं है इसका माध्यम। हम अगर किसी पेड़ को Vibration दें या किसी मन्दिर को Vibration दें या कहीं और भी Vibration दें तो वो चलायमान नहीं हो सकता, वो कार्यान्वित नहीं हो सकता। आप ही की धारणा से और आप ही के कार्य से यह फैल सकता है। फिर हमें यह सोचना चाहिए कि **सहजयोग में एक ही दोष है।** वैसे तो सहज है सहज में प्राप्ति हो जाती है। प्राप्ति **सहज में होने पर भी उसको संभालना बहुत कठिन है** क्योंकि हम हिमालय पर नहीं रह रहे हैं। हम कहीं ऐसी जगह नहीं रह रहे हैं जहां और कोई वातावरण नहीं है सिर्फ आध्यात्मिक वातावरण है। हर तरह के वातावरण में हम रहते हैं। उसी के साथ-2 हमारी भी उपाधियाँ बहुत सारी हैं। जो हमें चिपकी हुई हैं। तो सहजयोग में शुद्ध बनना, शुद्धता अपने अंदर लाना यह कार्य हमें करना पड़ता है जैसे कि कोई भी Channel हो और वो अगर शुद्ध न हो, जैसे बिजली का Channel हो उसमें से बिजली नहीं गुजर सकती। गर पानी का नल है, उसमें कोई चीज भरी है तो उसमें से पानी नहीं गुजर सकता, इसी प्रकार ये चैतन्य भी है। जिस नसों में बहता है उनको शुद्ध होना चाहिए और इन नसों को शुद्ध करने की जिम्मेदारी आप लोगों की है। हालांकि आपने मुझे कितनी बार कहा है कि माँ हमें भक्ति दो। माँ हमें नितांत आपके प्रति श्रद्धा दो किन्तु ये चीज आपको खुद ही समझदारी से जानना है। पहली तो बात है कि शुद्ध जब नसें हो जाएँगी तो आप आनंद में आ जाएंगे। आपको लगेगा ही नहीं कि आप कोई कार्य कर रहे हैं। आप कोई सा भी कार्य करते जाएंगे उसमें आप यश प्राप्त करेंगे। बहुत सहज में सारे कार्य होते जाएंगे जो दुनियाई कार्य हैं। हर तरह की सहूलियतें आपके अंदर आएंगी। हर तरह के लोग आपके पास आ करके आपको मदद करेंगे। आपको कभी-2 आश्चर्य होगा कि किस तरह से बिगड़ी बन रही है और किस तरह से हम ऊँचे उठते जा रहे हैं। इसमें लक्ष्मी जी की भी कृपा निहित है। कला की भी उन्नति निहित है। हर तरह की उन्नति, प्रगलभता इसमें आ जाती है। पर ये सारे एक तरह के प्रलोभन हैं ये समझ लेना चाहिए क्योंकि **कभी-कभी मैं देखती हूँ कि एक आदमी ने Business किया सहजयोग में। उसको बहुत रुपया मिल जाता है और वो फिर वो गिर जाता है और इतने बुरी तरह से वो गिर जाता है कि उठाना मुश्किल हो जाता है।** तो नसों की स्वच्छता हमें करनी चाहिए। **उसमें सवेरे का ध्यान अवश्य करना चाहिए। अगर आपका सवेरे ध्यान नहीं लगता तो कुछ न कुछ खराबी हमारे अंदर आ गई है, कुछ न कुछ गड़बड़ी हमारे अंदर हो गई**

है। कोई न कोई अशुद्ध विचार हमारे अंदर आ गए हैं उनको देखना चाहिए, जानना चाहिए, समझना चाहिए और सफाई करनी चाहिए। जिसे की हम introspection कहते हैं हमें अपनी ओर मुड़ कर देखना चाहिए। ये आपके हित के लिए है किसी ओर के हित के लिए नहीं। पहले तो अपना ही हित आप साध्य कर लीजिए। अगर आपके अंदर कोई दोष है, उस वजह से, उपाधियाँ होती हैं, आदतें होती हैं, वातावरण होता है, तौर तरीके होते हैं तरह-2 की चीज़ों से मनुष्य में ये षड्रिपु बैठे रहते हैं। ये जो हमारे अंदर 6 हमारे दुश्मन हैं छिपे रहते हैं और वो बार-2 अपना सर उठाते हैं इसलिए आवश्यक है कि हम अपने को कोसे नहीं अपने को पापी नहीं कहें, अपने को खराब न कहें, अपने को किसी तरह से लाँछित न करें लेकिन इसमें से निकलने का प्रयत्न करना चाहिए। जैसे कमल है। किसी भी गंदे, बिल्कुल सड़े हुए जगह में पैदा होता है और वो सब में से निकल कर वो फिर जब खिलता है तो सुरभित होकर के सारा जो कुछ भी वातावरण है उसे सुरभित कर देता है। इसी प्रकार सहजयोग की विशेषता है। आप भी उसी कमल की तरह हैं, न होते तो न आप सहज में आते और न ही इसे आप प्राप्त करते। आप कीड़े मकौड़े तो हैं नहीं। आप अवश्य ही कमल हैं। लेकिन इस कमल को सुरक्षित होने के लिए थोड़ी सी मेहनत करनी पड़ती है। अपनी ओर नज़र करने से।

सवेरे का जो ध्यान है अपनी ओर नजर करने का ध्यान है कि मैं क्या कर रहा हूँ। मेरे अंदर क्या दोष हैं मेरे अंदर क्रोध आता है। इस क्रोध को मैं किस तरह नष्ट करूँ। मुझे और ऐसी कुछ इच्छाएँ होती हैं जो कि मेरे लिए दुःखदायी हैं मुझे नष्ट करेंगी। उधर मैं क्यों जाता हूँ। इस तरफ ध्यान से आपको पता हो जाएगा कि आपके अंदर कौन सी चक्र की पकड़ है उसको आपको साफ करना है। उसको साफ करके, ठीक-ठाक करके और फिर आप ध्यान में बैठें। जैसे कि इसको प्रत्याहार कहते हैं। **माने ये कि सफाई, इसकी सफाई पहले करनी चाहिए। अपने मन की सफाई करनी चाहिए। उस थोड़े से समय में हमको अपने मन की सफाई करनी चाहिए।** अपने से अगर हमें प्रेम है अगर वाकई में हमारे अंदर स्वार्थ है तो स्व का अर्थ हमें जान लेना चाहिए और सोच लेना चाहिए कि इन खराबियों से हमें क्या फायदा होता है। क्षणिक कोई होता है, आनंद मिला। क्षणिक कोई उससे सुख लाभ हुआ, समझ लीजिए, कोई बात हुई भी तो भी उससे मैंने अपना तो जरूरी है कोई बड़ा भारी नुकसान कर लिया क्योंकि ध्यान नहीं लगा माने ये ही हुआ कि आपकी एकाकारिता अभी साध्य नहीं हुई। अब कोई तो लोग होते हैं वो ये भी कहते हैं कि हमारा तो ध्यान लगता है पर होता नहीं। **तो अपने साथ सच्चाई रखना बहुत ज़रूरी बात है।** गर हम अपने साथ सच्चाई नहीं रखेंगे तो फिर हम किसके साथ सच्चाई रख सकते हैं। ये अपने हित के लिए है। हमारे अच्छाई के लिए है। हमारे भलाई के लिए है। अधिकतर लोगों को मैं देखती हूँ सहज योग में आने के बाद बीमारियाँ अधिकतर नहीं होती। अधिकतर लोगों को सहजयोग में आने के बाद कई तरह का लाभ हो जाता है और अधिकतर लोगों को मैं बहुत आनंद में भी पाती हूँ। उनके घर के जो प्रश्न हैं वो भी छूट जाते हैं। सब कुछ व्यवस्थित हो जाता है। सब कुछ ठीक हो जाता है। तो भी

कभी-2 ऐसा होता है कि कोई न कोई वजह से, किसी न किसी पुरानी त्रुटि की वजह से सहज का ध्यान लगता नहीं। सवेरे उठ कर ध्यान करना बहुत आवश्यक है जो लोग सवेरे उठ कर ध्यान नहीं करेंगे वो सहज में कितने भी क्रियान्वित रहें और सब कुछ करते रहें अपने गहराई वो पा नहीं सकते। क्योंकि **आपकी गहराई में ही सारा सुख, समाधान, सारी संपत्ति, ऐश्वर्य श्री सब कुछ उसी गहराई में है। उस गहराई में उतरने के लिए बीच की जो कुछ रुकावटें हैं उनको आपको निकाल देना चाहिए। अपने को प्रेम करके, अपनी ओर दृष्टि करके, अपने को समझ करके कि मेरे अंदर यह दोष है। इस दोष को मुझे निकाल देना चाहिए। दूसरे के दोषों की ओर बहुत जल्दी हमारी नजर जाती है। ये काम आपका नहीं है ये मेरा काम है। ये आप काम मेरे ऊपर छोड़ दीजिए।** आप अपने दोषों की ओर देखिए।

उसके बाद शाम का जो ध्यान है, उस ध्यान में समर्पण होना चाहिए। तब फिर आगे की बात आती है कि आप किस तरह से समर्पित हैं माने उस समय ये सोचना चाहिए कि मैंने सहज योग के लिए क्या किया। मैंने सहज योग के लिए कौन सा कार्य किया। शरीर से, मन से, बुद्धि से। एक अंधे गायक हैं बहुत मशहूर हैं। विद्वान हैं बहुत पढ़े-लिखे हैं पता नहीं जाने कैसे अंधी आँख से इतना पढ़ा उन्होंने। वे मुझसे 3-4 बार मिले बस। ऐसी कविता एक दम फूट पड़ी कि मैंने सोचा ये ऐसे कैसे धँस गए एकदम अपनी गहराई में। ऐसी कविताएँ फूटी कैसे उनके हृदय से? ऐसी-2 बातें कि जो हज़ार देवी के नाम में भी नहीं लिखी हुई वो भी उन्होंने वर्णित करीं। और बिल्कुल सही मायने में। ऐसा उन्होंने वर्णन कैसे किया। तो उनकी गहराई पहले थी जैसे आप सबकी है लेकिन वो घुस पड़े उसमें। उसको प्राप्त किया उन्होंने। पहुँच गए वहाँ। सबके अंदर यह संपदा है। अब सब ही पूरी तरह से उसे प्राप्त कर सकते हैं। तो शाम का ध्यान जो है वो बाहर की ओर होना चाहिए। माने मैंने औरों के लिए क्या किया। मैंने सहजयोग के लिए क्या किया। मैंने माँ के लिए क्या किया। ये सब विचार आपको रखना चाहिए। जब आप ऐसा बैठ कर सोचेंगे तो सोचना चाहिए इस तरह से कि वो मुझे कितना प्यार करते हैं, उन्होंने मुझे कितना प्यार दिया। मैंने दिया उन्हें इतना प्यार। वो कितने मेरी तरफ Sincere हैं। मैं इतना उनकी तरफ Sincere रहा? इस तरह की बात सोचने से फिर आपको आनंद आने लग जाएगा जब आप सोचेंगे कि मैंने इतना प्यार किया। क्रोध करना, नाराज़ होना, झगड़ा करना, दूसरों के दोष देखना। इसमें अपना समय बर्बाद करने से देखना चाहिए कि उन्होंने किस तरह से मुझे प्यार किया। हमारे सहज योग में प्यार बहुत शुद्ध है, इसमें कोई गंदगी नहीं होनी चाहिए। जिस प्यार में गंदगी आ जाए वो सहज का प्यार नहीं। बिल्कुल निर्वाज्य जिसमें ब्याज भी नहीं माँगा जाता। ऐसा प्यार मैंने किसे दिया? फिर जब आप सोचेंगे कि मैं इतना प्यार करता हूँ, प्यार करती हूँ, बड़ा आनंद आएगा। ताकि तब जब आप कहते हैं कि मैं उससे नफरत करता हूँ वो ऐसा है, वो खराब है, ये है, तब आनंद नहीं आएगा। आनंद तभी आता है जब हम ये सोचते हैं कि ये प्यार का आंदोलन चल रहा है। बड़ी सुन्दर भावना मन में उठती है फिर। और ये सुन्दर भावना एक तरह की प्रेरणा होती है तब। उसका वर्णन करना तो मुश्किल ही है

परन्तु उसकी झलक चेहरे पर दिखाई देती है। उसकी झलक आपके शरीर में दिखाई देती है। आपकी गृहस्थी में दिखाई देती है। वातावरण में दिखाई देती है और सारे ही समाज में दिखाई देती है।

इसलिए दोनों समय का ध्यान अवश्य सबको करना चाहिए। एकाध दिन गर नहीं खाना खाया तो कोई बात नहीं। एकाध दिन गर नहीं बाहर घूमने गए तो कोई बात नहीं। एकाध दिन आराम नहीं हुआ तो कोई बात नहीं, लेकिन ध्यान सहजयोगियों को अवश्य करना चाहिए। क्योंकि ध्यान ही में पाया जाता है। **तो सवेरे का ध्यान गर हम कहें कि ज्ञान का है तो शाम का ध्यान भक्ति का है।** इस तरह से अपने को जब आप बिठाते जाएंगे तो समझ लेंगे कि कितने आप महत्वपूर्ण हैं। आपका महत्व इतिहास में कितना है। ये इतना बड़ा कार्य जो हो रहा है सहज योग में ये सब आप ही के माध्यम से हो जाएगा। आप अपने को औरों से मत तोलिये। जो लोग बड़े यशस्वी होते हैं जो बड़ी-2 जगहों में रहते हैं, वो ये काम करने वाले नहीं। डरपोक लोगों से भी ये काम होने वाला नहीं। लेकिन वैसा बनना होगा। पहले लोग हिमालय पर जाते थे। हज़ारों में से कोई एक को आत्मसाक्षात्कार की अनुभूति होती थी और बाकी तो सब ऐसे ही रह जाते थे। उनको बड़ी तपस्या करनी पड़ती थी। अब आपको तपस्या करने की जरूरत नहीं। हिमालय पर जाने की ज़रूरत नहीं। भूखे रहने की ज़रूरत नहीं। कुछ करने की जरूरत नहीं। **तो आपकी सफाई का फिर कौन सा मार्ग सहजयोग में है, जो शायद आपने जाना नहीं। तो जान लीजिए कि सामूहिकता। सामूहिकता ही आपकी सफाई का मार्ग है। जो लोग सामूहिक हो सकते हैं, निर्वाज्य, निर्वाज्य तरीके से जो सामूहिक हो सकते हैं, उनकी सफाई अपने आप हो जाएगी। उनको कोई विशेष तपस्या करने की ज़रूरत नहीं। सामूहिकता को भी एक तपस्या की तरह से नहीं बल्कि एक आनंद की तरह से मानना चाहिए। उसमें अगर ये सोचें कि कैसे इन लोगों के साथ रहा जाए ये तो ऐसे लोग हैं। ये तो वैसे लोग हैं। क्योंकि सहजयोग में सबके लिए द्वार खुले हैं तो वो आपके लिए कठिन हो जाएगा, गर आप यह सोचते हैं।** तपस्या के मामले में जो उसको मज़े से उठा सकता है वही सहज की तपस्या है। सब चीज़ हो ही रहा है उसमें करने का क्या है। सब चीज़ बन ही रही है। उसमें बनाने का क्या है। **आपकी स्थिति देवताओं जैसी है ये समझ लेना चाहिए। उससे कम नहीं है जैसे देवता लोग हम उनसे कहें या न कहें वे अपने कार्य को करते ही रहते हैं उसी प्रकार आपको भी हो जाना चाहिए।** उस स्थिति में आप बहुत आसानी से जा सकते हैं। कोई कठिन नहीं है कोई मुश्किल नहीं है लेकिन थोड़ा सा समय हमें अपने को भी देना चाहिए। पूरी समय हम बेकार की चीज़ों में समय बिताते हैं तो कुछ समय हमें अपने को भी देना चाहिए। और सवेरे व शाम प्रतिदिन ध्यान करना चाहिए, प्रतिदिन। इसमें अगर नहीं हुआ तो ये नहीं कि मैंने बड़ा गलत कर दिया। ऐसी बात नहीं ध्यान गर नहीं हुआ तो कोई बात नहीं पर ध्यान करना चाहिए ये जो मैं कह रही हूँ एक order की तरह से नहीं। एक सूझबूझ की बात। एक विचार कि जिससे मुझे फौरन पता चल जाता है कि कौन लोग ध्यान करते हैं रोज़ और कौन लोग नहीं

करते। फौरन। क्योंकि जैसे कोई कपड़ा रोज़ धोएँ तो वह साफ ही रहेगा, उसमें गंदगी कैसे आएगी? और जो नहीं करते हैं उसकी गंदगी फौरन दिखाई दे जाती है। बहुत लोगों के 2-4 दिन ध्यान न करने से बहुत खराबी आ जाती है। तो ये स्नान है। गर स्नान न करें तो भी चलेगा पर ध्यान ज़रूर करना चाहिए। अपनी शांति के लिए, अपने सुख के लिए, अपने हित के लिए और सारे संसार के हित के लिए हमें करना चाहिए। **अपने से गर हमें प्रेम है तो हमें चाहिए कि हम जाने कि हम कितने महत्वपूर्ण हैं, कितने गौरवशाली हैं और हमारे लिए सबसे कितना बड़ा काम, कितना ऊँचा काम हमें आता है।** आशा है आप लोग मेरा लैक्चर सुन करके उस पर थोड़ा सा विचार करेंगे। मनन करेंगे। ये न हो कि मैंने कह दिया उसके बाद माता जी ने कह दिया। फिर वो दूसरों पर लगाते हैं, अपने लिए कहा है ऐसा नहीं नहीं सोचते। सोचते हैं माता जी ने उनके लिए कहा मेरे लिए नहीं कहा। हरेक को सोचना चाहिए कि ये मेरे लिए ही कहा है कि मुझको कैसे ऊपर उठना चाहिए, इसमें कैसे मुझे कामयाब होना है, कैसे मुझे बढ़ना है।

सबको अनन्त आशीर्वाद।

बम्बई जन कार्यक्रम

13.3.2000

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

सत्य को खोजने वाले आप सभी साधकों को हमारा प्रणाम। पहले हिन्दी में बात करेंगे और उसके बाद मराठी में क्योंकि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है और मैं सोचती हूँ कि सब लोगों को कम से कम हिन्दी जान लेना चाहिए। मराठी जैसी तो कोई भाषा ही नहीं है, ये भी मैं मानती हूँ। लेकिन जो मराठी जानता है उसके लिए हिन्दी जानना कोई मुश्किल नहीं। बहुत सरल भाषा है ये।

आपके सामने अनेक बार मैंने कुण्डलिनी के बारे में बताया है और ये भी समझाया है कि कुण्डलिनी जागरण से कैसे हमारे अन्दर के विध्वंसक गुण हैं जो निकल जाते हैं। वो हमारे अन्दर षड्रिपु हैं काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, मत्सर। ये षड्रिपु हमेशा हमें सताते रहते हैं और वो इसलिए आते हैं क्योंकि हमारा जो दिमाग है वो हर समय कोई भी चीज़ को देखकर उसकी प्रतिक्रिया करता है। उस प्रतिक्रिया के कारण हम अन्दर अपने मस्तिष्क में ये सोचते हैं कि ये सब करने से हमारा फायदा हो जाएगा, लेकिन ये तो हमारे सारे दुश्मन हैं। तो इनको अपनाने से आपको कैसे फायदा हो सकता है? किन्तु आज जो समाज हम देख रहे हैं, ख़ासकर हमारे भारत-वर्ष में इतनी अराजकता फैली हुई है, इस क़दर दुष्ट लोग आ गए हैं, ऐसे-ऐसे लोग जिन्होंने खुद को भी बरबाद किया हुआ है और सारे देश को भी बरबाद करना चाहते हैं। ऐसे जो लोग हैं बम्बई में तो ख़ासकर लोग कहते हैं कि बहुत ही ज्यादा गुण्डे लोग बैठे हुए हैं। सो ये समझ में नहीं आता। इस वक्त ऐसी कौन सी बात हो गई है कि ये लोग सब पनप गए? उसका कारण है ये घोर कलियुग। घोर कलियुग की ये पहचान है कि इसमें इस कदर ऐसे लोग जो कि अपने दुश्मन हैं, देश के दुश्मन हैं, सबके दुश्मन हैं, वो जरूर फूलेंगे-फलेंगे। पर कब तक? जब तक उनका जागरण नहीं होता जब आपकी कुण्डलिनी का जागरण हो जाता है तो आपको हैरानी होगी कि आप एकदम बदल जाते हैं। आपकी प्रतिक्रिया जो है वो बदल जाती है। अभी एक साहब हैं वो मुझे बता रहे थे कि माँ मैं जब सहजयोग में आया तो मेरी तबियत बदल गई। मतलब कहने लगे पहले मेरा जब कहीं ट्रांसफर (Transfer) होता तो आफत। हम लोग इतने परेशान रहते थे मियाँ-बीबी। ये सहजयोग का कमाल है कि मुझे अब कुछ नहीं लगता। मैं मज़े में हूँ, मैं आनन्द में हूँ। होना है वो होगा। ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि जब आप कुण्डलिनी के जागरण की कृपा प्राप्त करते हैं और जब आपको ये मिलता है तब आप स्वयं ही बदल जाते हैं। कोई उपदेश देने की जरूरत नहीं, कोई चीज़ समझाने की जरूरत नहीं, कुछ नहीं। ये अपने आप ही घटित होता है क्योंकि ये शक्ति

आपके अन्दर स्थित है। परमात्मा ने ये शक्ति आपके अन्दर दे दी पर अग़र आपको उधर नज़र ही नहीं करना, आपको उसके बारे में जानना ही नहीं और आप बेकार चीज़ों में अपना समय बर्बाद कर रहे हैं। तो ऐसे लोगों के लिए उचित है कि वो फिर नहीं आए सहजयोग में। पर जो लोग व्यथित हैं और जो सोचते हैं कि हमें कुछ प्राप्त करना है इस जीवन में, अग़र हमें आत्मसाक्षात्कार मिल जाए तो कितनी ऊँची बात है? न हिमालय पर जाना है न पैसे देने हैं, न कुछ करना है। सो ये कितनी बढ़िया बात है और इसको प्राप्त करने के लिए आपको कोई तकलीफ करने की ज़रूरत नहीं है। स्वयं परमात्मा ने आपके अन्दर ये शक्ति स्थित कर दी है और इसकी जागृति करना ही चाहिए। ये अग़र आप नहीं कर रहे, इस वक्त आप चूक गए तो ये कुछ बनने नहीं वाली बात। अभी सब काम आप करते हैं, सब परेशानियाँ उठाते हैं। कभी कुछ होता है, पर आपको अभी तक कोई आनन्द नहीं मिला। आनन्द में सुख और दुख दो चीज़ें नहीं होतीं सिर्फ आनन्द केवल आनन्द। दूसरे आपको कोई सत्य नहीं मिला। सत्य माने आधा-अधूरा मिला है, लेकिन केवल सत्य (Absolute Truth) नहीं मिला। उसके लिए आपको कुण्डलिनी का जागरण कराना चाहिए जिससे आपका जो है ये मस्तिष्क हरेक चीज़ों की प्रतिक्रिया करता रहता है वो एकदम रुक जाएगा और उसके रुकने से आपका सम्बन्ध ही उस चारों तरफ फैली हुई परमात्मा की शक्ति से हो जाएगा। ये बड़े आश्चर्य की बात है कि ये जो कार्य है इतना सहज और सरल है। इसमें कोई भी सिरदर्द नहीं, कोई भी आपको व्यायाम (Exercise) वगैरा नहीं करना, सिर के बल खड़ा नहीं होना, एक पाँव पर खड़ा नहीं होना, कुछ नहीं। और ये सबके लिए दुनिया में है, सारे संसार के लिए इच्छुक है। सिर्फ आपके लिए नहीं, कहीं और लोग के लिए नहीं पर सारे संसार के लिए। सहजयोग 86 देशों में फैला हुआ है और वहाँ के लोग मग्न हैं बड़े मग्न हैं ख़ुश हैं और उनकी जिन्दगियाँ दुरुस्त हो गईं, ठीक हो गईं और घर में हर तरह का आराम चैन आ गया।

हर जगह आपको समझना चाहिए कि जितने भी बड़े-बड़े धर्म हो गए उन्होंने कहा है कि एक दिन ऐसा आने वाला है जिसमें आपका मनवन्तर होना है, जिसमें आप लोग विशेष चीज़ को प्राप्त करेंगे। कुरान में तो साफ़ लिखा हुआ है कि जब क़ियामा आएगा तो आपके हाथ बोलेंगे। आ गया है, लेकिन आपके हाथ नहीं बोल रहे हैं तो फ़ायदा क्या? इसको प्राप्त करना ही आप सबके जीवन का लक्ष्य है। आप नहीं करना चाहें ये आपकी मर्जी है। पर ये चीज़ घटित हो सकती है और हो रही है अनेक देशों में और अपने देश में भी होना चाहिए। यहाँ की कशमकश को देखते हुए रोज की अशान्ति को देखते हुए हमें मान लेना चाहिए कि उसे प्राप्त करना चाहिए जिसमें परम शान्ति है, परम सुख है परम स्थान है। उसके लिए आपको कुछ करना नहीं है। मैंने कहा घर द्वार छोड़ना नहीं है कुछ नहीं करना और इसे प्राप्त करना है।

हमारे यहाँ मुश्किल ये है, ख़ासकर महाराष्ट्र में, कि लोग इतना ज्यादा जानते हैं एक बोरा भर

के उन्होंने देवता लगा रखे हैं। घर पर उनके सवेरे से शाम तक पूजा करना, ये करना वो करना, उसमें चलता है या और तरह की चीज़ें चल पड़ी हैं। यही हाल हिन्दुओं का यही हाल मुसलमानों का है और यही हाल इसाईयों का। इस सब चक्करबाजी से आपको कुछ फ़ायदा हुआ ही नहीं। तो दूसरी तरफ आँख करके देखिए कि वो कौन सी चीज़ है जिसे हमें प्राप्त करना है? जिससे हम ख़ुद स्वयं को पहचान लेंगे और हमारे पास वो सत्य आएगा जो सिर्फ सत्य है उसमें कोई खोट नहीं। उसको हम जानेंगे इस पर आईंस्टिन जैसे बड़े भारी शास्त्री ने कहा है ये सब चीज़ें आपको, एक उसको उन्होंने टोर्शन एरिया (Torsion Area) कहा है। उस **टोर्शन एरिया** से आपको प्राप्त होगी और उससे आपका सम्बन्ध होना बहुत ज़रूरी है। जब तक आपका उससे सम्बन्ध ही नहीं है तो आप नामस्मरण किसका कर रहे हो भई। कोई आपको पहचानता भी नहीं और आप नामस्मरण कर रहे हो! इन चीज़ों से जो असलियत है वो आपको मिलने वाली नहीं। असलियत जब होगी जब आप असलियत पर आएं और यथाशक्ति उस पर जम जाएं। कोई कठिन काम नहीं है मैंने बहुत बार कहा है ग़र महीना भर आप लोग सहजयोग करें तो आप अपने ही गुरु हो जाते हैं और आप स्वयं ही लोगों की बीमारियाँ ठीक कर सकते हैं। आपको ज़रूरी नहीं कि कहीं और जगह जाएं या कुछ और लोगों से मदद लें। ये सब कितनी बार कहनेपर भी लोगों के दिमाग़ में उतरता नहीं है ये बड़ा दुर्भाग्य है। क्योंकि जिस परमात्मा ने सृष्टि रची है क्या वो देख सकते है कि उनके बनाए हुए मानव लोग इतनी बुरी तरह से पीटे जाएं, मारे जाएं, भगाए जाएं, सताए जाएं? कभी नहीं। उसका इलाज ज़रूर उन्होंने हमारे अन्दर में किया है और इसके लिए अनेक साधू-सन्तों ने कहा है।

कबीर ने कहा साफ-साफ, कोई कबीर को समझ ही नहीं सकता कि वो क्या कह रहे हैं। असल में भाषा उनकी जो है वो बहुत काव्यमय होने से लोग कबीर को नहीं समझ सकते। पर कबीर ने कहा है साफ-साफ। सहजयोग की सारी बातें कबीर ने कही हैं। कितने ही दोहे ऐसे हैं जिसमें उन्होंने बताया है ईडा, पिंगला, सुखमन नाड़ी रे। अब कोई कहेगा ये क्या होता है-ईडा, पिंगला सुखमन नाड़ी? सहजयोग में आइए सब पता चल जाएगा। शून्य शिखर पर अनहद बाजे रे। अब कौन जाने शून्य शिखर क्या है और अनहत् क्या है। हिन्दी में इस पर इतना कार्य हो चुका विशेषत: गुरुनानक साहब ने इसका बड़ा प्रधान्य रखा और हिन्दुस्तान में इस मामले में इन सब साधू-सन्तों ने बिल्कुल एक तान रखी, सब सहमत थे।

जब महाराष्ट्र से नामदेव बड़े भारी कवि थे और बहुत बड़े सन्त थे जब वो पहुँचे पंजाब तो गुरुनानक ने उनका बड़ा मान किया और उनसे कहा बेटे, तुम पंजाबी सीख लो और पंजाबी में लिखो। इतनी बड़ी किताब उन्होंने पंजाबी में लिखी और उसमें उन्होंने पूरा कुण्डलिनी का वर्णन आदि वगैरा बहुत सुन्दर कर दिया। अब नामदेव जो थे वो श्री राम के भक्त थे और वो सगुण में विश्वास करते थे। और नानक साहब ने उनसे ये कहा कि देखो सगुण में

विश्वास रखना बुरी बात नहीं क्योंकि तुम तो पार आदमी हो तुम्हारे लिए ठीक है। तुम जानते हो कि कौन सा सगुण ठीक है। तुम जानते हो कि कौन सा सगुण ठीक है कौन सा नहीं। कौन सी मूर्ति जो है स्वयंभू है कौन सी नहीं। पर सब जनता तो जानती नहीं है। तो इनके लिए निर्गुण की बात करो। कबीर ने कहा है कि 'निर्भय निर्गुण गाऊंगा' निर्भय होकर मैं निर्गुण गाऊँगा। उन्होंने कहा कि मुझे किसी से भय नहीं मैं निर्गुण की बात करूंगा और यही बात है। और नामदेव ने भी, नामदेव ने भी निर्गुण पर ही बहुत कुछ लिखा और जो निर्गुण है उसको आदि शंकराचार्य ने 'स्पन्द' कहा। स्पन्द माने आपके अन्दर जो चैतन्य की भावना है। चैतन्य जो महसूस होता है जिसे Viberations कहते हैं वो ही 'स्पन्द' है। सब लोगों ने यही बात कही है और विदेश में भी बहुत लोगों ने इस पर बात करी हुई है। पर किताबों की बातें किताबों में और आजकल लोगों के दिमाग़ में पता नहीं क्या फितूर आ गया है कि वो समझना ही नहीं चाहते कि वो क्या हैं? किसलिए मैं गलत रास्ते पर चल रहा हूँ, किसलिए मैं सबको परेशान कर रहा हूँ, किसलिए मैंने यह सब अवलम्बन किया हुआ है इस तरफ विचार ही नहीं आता और उससे क्या हो रहा है कि मनुष्य भटक गया है भटक के गलत रास्ते पर चला जाता है लेकिन उससे उसी की हानि होती है किसी और की नहीं उसकी हानि होती है। अनेक भटकने के रास्ते हैं आप लोग जानते भी हैं और लोगों को भटकते हुए देखते भी हैं। कुछ कहने से ठीक नहीं होगा ये मैं जानती हूँ मैं अग़र कहूँ कि ये नहीं करो वो नहीं करो तो आधे लोग तो उठकर चले जाएंगे लेकिन ग़र कुण्डलिनी का जागरण हो गया तो आप ख़ुद ही इस चीज़ को समझ लेंगे कि गलत है, ये हमारे लिए हानिकारक है। क्यों? क्योंकि आपकी आत्मा का प्रकाश आपके हृदय में से उमड़ता हुआ आपके चित्त में आ जाता है और हर एक आदमी समझ जाएगा, जो आत्मसाक्षात्कारी है, कि इसमें क्या गलत है क्या बुरा है और जो उचित है ये ख़ास चीज आपके आत्मसाक्षात्कारी है। जहाँ आप अपना अच्छा बुरा पूरी तरह से समझ सकते हैं और इसके अलावा, इसके अलावा आपको परमात्मा की पूरी तरह से मदद है क्योंकि उनकी शक्ति चारों तरफ प्रेम की फैली हुई है। 'प्रेम' यही एक बड़ा भारी सामर्थ्यवान आपके पास एक बड़ा समर्थ ऐसा एक शक्तिशाली विराजमान है। ये प्रेम, इसको निर्वाज्य प्रेम कहते हैं जिसमें आप किसी चीज़ की उम्मीद नहीं करते बस प्यार में डूबे जाते हैं। प्यार की ज़ुबान और होती है, प्यार के तौर-तरीके और होते हैं। उसका ढंग और होता है हम लोग सोचते हैं कि ऐसे लोग बहुत बिड़ला हैं बिल्कुल नहीं। ऐसे अनेक लोग हैं जो प्यार में वशीभूत हैं ख़ासकर सहजयोगी लोगों ने इसको अहसास किया कि प्यार कितनी बड़ी चीज़ है। लेकिन दूसरों से अच्छे से बात करना ही आजकल मुश्किल है। उसके आगे जाइए तो ये दूसरों की चीजें हड़पना ये बहुत अच्छी बात है और उससे भी आगे जाइए तो आजकल जो चल रहा है अपने देश में हर तरह की यातनाएं, हर तरह की प्रक्षुब्ध करने वाली, बहुत अत्यन्त ग्लानि लाने वाली ऐसी चीजें ये सब आई हैं। मनुष्य इस

चीज़ के लिए नहीं पैदा हुआ है। मनुष्य पैदा हुआ था कि उस परमात्मा की शक्ति को जाने और उस शक्ति का उपभोग करे उससे आनन्द उठाए और हमेशा के लिए शान्ति का जीवन व्यतीत करे। शान्ति फैलाने के लिए सबसे अच्छी चीज़ ये है कि आदमी का मनवन्तर होना चाहिए Transformation होना चाहिए। जब तक आदमी बदलेगा नहीं जब तक उसके अन्दर ये प्रकाश आएगा नहीं। तब तक वो ऐसे ही भटकता रहेगा, ऐसे ही धन्धे करता रहेगा, ऐसी ही चीज़ों में उलझता रहेगा जिसमें वो जानता ही नहीं कि सीधे रस्ते चल रहा है कि नहीं। इसलिए अपने अन्दर का दीप जला लेना चाहिए। जब ये दीप जल जाएगा तो आप इस तरह आसानी से समझ पाएंगे कि हमारे अन्दर क्या शक्ति है और हम इस शक्ति से क्या कर सकते हैं? ये प्रेम की शक्ति है। बड़ी जबरदस्त है प्रेम की शक्ति। ऐसे छिछोरा प्रेम नहीं ऐसे उथला प्रेम नहीं पर बड़ा गहन। ऐसा अन्दर से प्रेम का बिल्कुल प्रवाह जैसे कोई सागर बनाता हुआ दौड़ता है और उस प्रेम के सहारे आप आनन्द में बिल्कुल रहते हैं और दूसरों को भी आनन्द देते हैं। ये एक परमशक्ति आपके अन्दर है जिसे मैं यही विनती करूंगी कि आप लोग इसे प्राप्त करें।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद

तो आपकी सफाई का फिर कौन सा मार्ग सहजयोग में है, जो शायद आपने जाना नहीं। तो जान लीजिए कि सामूहिकता। सामूहिकता ही आपकी सफाई का मार्ग है। जो लोग सामूहिक हो सकते हैं निर्वाज्य, निर्वाज्य तरीके से जो सामूहिक हो सकते हैं उनकी सफाई अपने आप हो जाएगी। उनको कोई विशेष तपस्या करने की ज़रूरत नहीं। सामूहिकता को भी एक तपस्या की तरह से नहीं बल्कि एक आनन्द की तरह से मानना चाहिए। उसमें अगर ये सोचें कि कैसे इन लोगों के साथ रहा जाए, ये तो ऐसे लोग हैं, ये तो वैसे लोग हैं। क्योंकि सहजयोग में सबके लिए द्वार खुले हैं तो वो आपके लिए कठिन हो जाएगा ग़र आप यह सोचते हैं।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

27.11.91